टी. बी. की ..... क, ख, ग

टी.बी. का मरीज बीमारी को फैलने से कैसे रोके?

1. ज्यादा से ज्यादा समय बाहर ताजी हवा में रहो– जैसे खुले में, पार्क में, छत पर, खेत में, आंगन में या किसी पेड़ के नीचे। अगर मौसम सही है तो रात को भी बाहर सो जाओ।
2. खासी करते समय मुंह पर रूमाल रखो।
3. बंद कमरे में न रहो। भीड़–भाड़ से दूर रहो।
4. इधर–उधर कभी मत थूको।
5. छोटे बच्चों को गोद में उठाना, चूमना या अपने साथ सुलाना उचित नहीं है।
6. नशे से दूर रहो जैसे बीड़ी सिगरेट, गुटका, तम्बाकू व शराब इत्यादी।
7. अच्छा सन्तुलित खाना खाओ जैसे–दूध, हरी सब्जी, दाले व फल आदि।
8. टी0बी0 का इलाज है। दवाई नियम से 6 से 8 महीने खानी चाहिए।
9. **महीने, दो महीने के इलाज से ही काफी आराम आ जाता है। लेकिन इलाज पूरा करो– 6 से 8 महीने। बीच में कभी न छोड़ो।**
10. इलाज के हर 2 महीने होने पर बलगम की जांच करवाओ।

इन सावधानियों की सबसे अधिक आवश्यकता फेफड़े के उन टी. बी. रोगियो को है, जिनकी बलगम में कीटाणु जा रहे हैं यानी जो स्पूटम पॉजिटिव हैं। केवल फेफड़े के कुछेक मरीज जिनकी बलगम में कीटाणु जा रहे हैं बीमारी फैलाने में सक्षम होते है।

फेफड़े को छोड़ जब टीबी दूसरे अंगों में होती है तो यह एक से दूसरे को नही फैलती। यानि हड्डी, जोड़, गुर्दा, गाँठ, दिमाग, जिगर, आतड़ी या पेट इत्यादी की टी.बी. के मरीज दूसरों में संक्रमण नहीं करते।

गहन सोच-विचार के बाद इन सब ने अपने जीवन के तर्जुबों में से चुन-चुनकर कुछेक सत्य कथाऐं इस पुस्तक में डाली हैं , ताकि टी. बी. रोगी, उसके रिश्तेदार व आम जनता जनार्दन का भला हो सके और हमारा देश टी. बी. मुक्त हो सके।

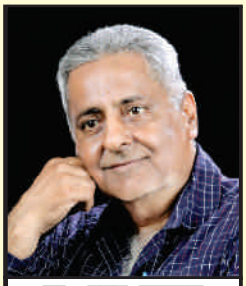

डा0 रमन कक्कड़
सम्पादक (टी.बी. स्पे ि लस्ट)
बी.के. अस्पताल, फरीदाबाद

डा0 बीना शर्मा
डिप्टी सिविल सर्जन, टी.बी.
फरीदाबाद, हरियाणा

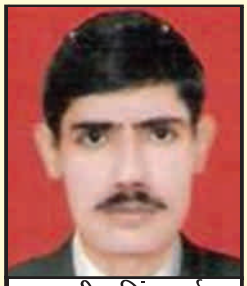

सत्यबीर सिंह नर्वत
एस.टी.एस., बी.के.
सिविल अस्पताल फरीदाबाद

पवन कुमार,
सीनियर टी0.बी0. लैब सुपरवाईजर,
जनरल अस्पताल एम्स बल्लभगढ़

विजय पाल
टी.बी.एच.वी., सरकारी
अस्पताल एम्स बल्लभगढ़

शशि बाला
टी.बी.एच.वी., सिविल डिस्पेंसरी
ओल्ड फरीदाबाद

शारदा रानी
टी.बी.एच.वी., प्राइमरी स्वास्थ्य
केन्द्र, पल्ला।

रेखा रानी
टी0.बी0. हेल्थ विजिटर,
डाट्स सेन्टर, जच्चा–बच्चा
अस्पताल, सैक्टर–30, फरीदाबाद

हरबन्स कपूर
एस.टी.एस. 10 साल
जनरल अस्पताल एम्स, बल्लभगढ़

प्रियंका शर्मा
टी.बी.एच.वी., ई.एस.आई.
डिस्पेन्सरी

राजकुमार शर्मा
सीनियर टी.बी. लैब सुपरवाइजर

दीपमाला
टी.बी.एच.वी.,
बी.के. सिविल अस्पताल, फरीदाबाद

सुभाष गैहलोत
पहले सीनियर लैब
टैक्नीि ियन

फज्जू खान
लैब टैक्नि ियन,
औरन्गाबाद,पलवल

रविन्दर
स्टाफ
आर0 एन0 टी0 सी0 पी0

दिनेश कुमार
टी.बी.एच.वी., ई.एस.आई.

DISTRICT TUBERCULOSIS CENTRE
FARIDABAD (HARYANA)

(REVISED NATIONAL TUBERCULOSIS CONTROL PROGRAMME)

प्रकाशक व सम्पादकः डा. रमन कक्कड़ (MBBS, DTCD)
टी बी स्पेशिलस्ट, बी. के. सिविल अस्पताल, फरीदाबाद

Concept, Compiled and Edited by : Dr. Raman Kakar

Printed by:
Jack Offset Works
1J-25, Arya Samaj Road, NIT Faridabad
Ph: 0129-4020262, 9871099111

इस पुस्तक का विमोचन बी0के0 अस्पताल के टीबी विभाग में जिले के स्वास्थ्य कर्मियों की पूरी टीम की उपस्थिति में इसके एक मुख्य लेखक **श्री सतवीर सिंह नर्वत, एस टी एस** ने 23 जून 2012 को किया क्योकि संयोगवश, उसी दिन उनकी शादी की 10वीं सालगिरह थी।

सम्पादकीय

टी0 बी0 की जानकारी का हैल्मेट पहनिये

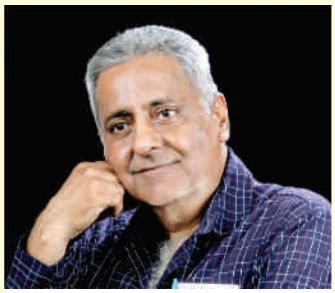

डा0 रमन कक्कड़
सम्पादक (टी.बी. स्पे ि लस्ट)
बी.के. अस्पताल, फरीदाबाद
लेखक : एक मौत प्रति मिनट (3 भाशाओं में), द टैस्ट ऑफ टाइम (इंग्लि ा)
निर्माता : "तीन बाते" टी.बी. पर फिल्म, अनेको रेडियो प्रोग्राम

हर मोटर साइकिल सवार को हैल्मेट पहनना जरुरी है। क्यो ? क्या हर किसी का ऐक्सीडेन्ट होता है ? नहीं, किसी–2 अभागे का ही होता है। लेकिन ट्रैफिक के हालात भारत में काफी खराब हैं।

ठीक इसी तरह भारत में टी.बी. की बीमारी काफी फैली हुई है। न मालूम, कब किसका नम्बर आ जाए। इसलिये हर भारतवासी को टी.बी. की जानकारी का हैल्मेट पहन लेना चाहिए ताकि अपना व अपने बच्चों का बचाव कर सकें। **यह पुस्तक नहीं बल्कि जानकारी का हैल्मेट है, बस एक घण्टा बैठ कर इसे ध्यान से एक बार पढ़ लीजिये और पाइये आजीवन टी.बी. से सुरक्षा।**

आप हमे ा के लिये जान जायेंगें कि – टी.बी. क्या है ? इसके लक्ष्ण क्या है? क्या–क्या टेस्ट करवाये जायें, कहाँ जाऐं, किसे दिखाऐं, इसे फैलने से कैसे रोकें, इलाज में क्या–क्या गल्ती न करें – इत्यादि। जानकारी भी टी.बी. के इलाज का एक अभिन्न अंग है ।

सौभाग्यव ा, हमारे जिले फरीदाबाद में मेहनती व अनुभवी टी.बी. कर्मचारियों की एक बहुत स ाक्त टीम है। सबने गहन सोच विचार के उपरान्त अपने अपने जीवन के अनुभवों के खजाने में से चुन–चुन कर कुछ मोती एक माला के रुप में पिरोऐ हैं ताकि मरीज, उसके रि तेदार, स्वास्थ्यकर्मी व आम जनता उनके आजीवन तजुर्बों का फायदा उठा पाए। सत्यकथाओं के माध्यम से यह सब कुछ बहुत ही सरल ढंग से समझाया गया है। आजीवन टी.बी. में कार्यरत बहुत अनुभवी कर्मचारियों ने खूब सोच समझ कर अपने–अपने तर्जुबे का निचोड़ इस उम्मीद व प्रार्थना के साथ इसमें डाला है कि यह पुस्तक मरीजों, उनके रि तेदारों व पब्लिक को इस नामुराद बीमारी से मुक्ति दिलाएगी।

विश्वास कीजिये, टी.बी. के मामले में जानकारी भी उतनी ही

नई पहल

डा0 बीना शर्मा
डिप्टी सिविल सर्जन, टी.बी.
फरीदाबाद, हरियाणा

टी.बी. भारत वर्श के लिये एक बहुत बड़ी समस्या है । इस पर विजय पाने के लिये भारत सरकार जी तोड़ कोि ा ा करती रही है। 1962 में राश्ट्रीय टी.बी. प्रोग्राम क्रियान्वित किया गया । फिर 1997 में ड्ाटस प्रणाली को अपनाते हुए इस प्रोग्राम को और अधिक भाक्ति ाली बनाया गया। आज डाट्स प्रोग्राम पूरे दे ा के हर जिले में उपलब्ध है। इस प्रोग्राम में टी.बी. की बढ़िया दवाऐं मरीज के दरवाजे पर ही मुफ्त उपलब्ध कराने की चेश्टा जारी है। इसमें दवाओं की कमी से इलाज में कभी भी रुकावट नहीं आती क्योंकि पहले ही दिन 6 महीने की भरी पूरी दवाइयों का एक डिब्बा मरीज के लिये अलग से सुरक्षित कर दिया जाता है । इस प्रोग्राम के नतीजे बहुत अच्छे हैं।

मैं अपने टी.बी. विभाग की ओर से फरीदाबाद के जिला उपायुक्त श्री बलराज सिंह मोर का धन्यवाद करती हूँ कि वह हमेशा टी.बी. उन्मूलन में बहुत सक्रिय योगदान देते हैं ।

डा0 एच.आर.यादव, सिविल सर्जन फरीदाबाद का आभार व्यक्त करती हूँ जो टी.बी. के मरीजों के लिये बनाए गए सभी कार्यक्रमों में बहुत गर्मजोशी से हमारा मार्ग दर्शन करते हैं।

डा0 सुधीनाथ डब्लयू.एच.ओ. कन्सलटैन्ट हमारी सभी कोशिशों को भरपूर समर्थन देती है व बहुत मेहनत से हमें हर कदम पर टैक्निकल गाइडैन्स देती रहती हैं। उनका भी धन्यवाद।

किसी व्यक्ति या परिवार को किसी किस्म की ठेस, दुःख, शर्मिन्दगी, बेइज्जती या नुकसान पहुँचाने का हमारा कतई कोई इरादा नहीं है। मरीजों के नाम व टी0बी0 नम्बर इत्यादी लिखने का एक ही उद्देश्य है कि सच्चाई पेश की जाए ताकि हमारा संदेश सच की ताकत से पाठक के दिलों दिमाग पर एक गहरी छाप छोड़ जाऐ ताकि मरीजों व उसके परिजनों का भला हो। आखिरकार, आज भी भारत में टी0बी0 से हर 3 मिनट में दो मौतें हो रहीं है। इनको रोकने की यह पुस्तक एक तुच्छ प्रयास है जो कि अपने तरह की एक पहल है।

इस नेक प्रयास के सूत्रधार व इस पुस्तक के सम्पादक हैं डा0 रमन कक्कड़ जोकि कई द ाकों से टी.बी. की जँग कई सतहों पर लड़ रहे हैं। उन्होने टी.बी. पर कई पुस्तकें लिखी हैं, फिल्में बनाई हैं रेडियो प्रोग्राम बनाए हैं व अनेकों अवार्ड प्राप्त किये हैं । मैं उन्हें व उनकी पूरी टीम को भाुभकामनाऐं देती हूँ, और आ ा करती हूँ कि भविश्य में भी पब्लिक के भले के लिए इस नई पहल के पश्चात और भी नए–नए प्रयोग करते रहेगें व पुस्तकें इत्यिादी उपलब्ध करवाते रहेंगे।

तब तुम कहां थे ?

सत्यबीर सिंह नर्वत
एस.टी.एस., बी.के.
सिविल अस्पताल फरीदाबाद
''पिछले दस सालों में हजारों टी.बी. के मरीजों से निकट सम्बन्ध''
मो. 9891383283

जिन्दगी में ऐसा नजारा मै पहली बार देख रहा था। हालांकि टी0.बी0. के न जाने कितने ही मरीजों के दुःख दर्द का चलचित्र मेरी नजरों से गुजर चुका था। लेकिन उस औरत ने जैसे अपनी बीमार बेटी को अपनी पीठ पर उठाया हुआ था मुझे तीर की तरह चुभा। मैं टकटकी लगाकर उनको देखता ही रहा। बड़े यतन से उस बेचारी औरत ने अपनी बेटी को धीरे–धीरे नीचे उतारा और घास पर बैठा दिया। लड़की इतनी बीमार थी कि जैसे हड्डियों का ढाँचा। उससे न बैठा जा रहा था न उठा जा रहा था। न पानी पीया जा रहा था। हाथ इतना कांप रहा था कि गिलास मे से पानी छलक कर बाहर गिर रहा था। मां अपने पल्लू से बार–2 उसको हवा कर रही थी और उसका पसीना पौछ रही थी। उसने बगल में घास पर 5 महीने की नन्नी मुन्नी बच्ची लिटा रखी थी। तपती दोपहर थी। ओ0.पी0. डी0. बंद हो चुकी थी। डॉक्टर साहब जा चुके थे। होडल के जनरल अस्पताल में बस इक्का–दुक्का कर्मचारी ही दिखाई दे रहे थें।

मैने अपना हैल्मैट उतारा। अपने कन्धे से थैला निकाला। मोटरसाइकल की चाबी भी मेज पर वापिस रख दी। और उनके पास गया। मां ने कुछ यूं बतायाः–

अभी पिछले ही साल मैने अपनी बेटी मधु की भादी दिल्ली में करी थी। 4–5 महीने पहले ही इसकी बेटी हुई। प्रसव के बाद से ही मधु को खांसी–बुखार चालू हो गया और ये कमजोर होने लगी। ससुराल वालो ने उसे इधर–उधर दिखाया लेकिन बेकार। अब परसों ही मुझे सूचना भेंजी कि अपनी बीमार लड़की को ले जाओं। बस सीधा जैसे कैसे यही लेकर आई हूं। काफी कहने सुनने पर भी इसका पति तो साथ आने को तैयार नहीं था।

मै समझ गया था। लंबी खांसी, लंबा बुखार और इस तरह से वजन का इतना कम होना तो टी0.बी0. कि निशानी है। मैने उसके सारे कागज पत्तर छान लिए। पर किसी डॉक्टर ने बलगम की जांच व छाती का एक्सरे नहीं करवा रखा था। बस मैने अपने मित्र भरतराम लैब टेक्निि ायन को ढूढा, उसका हाथ थामा, लैब खुलवाई और मधु के बलगम के नमूने की फौरन जांच करवाई। उसकी बलगम में खूब कीटाणु थे यानि वो 3+ स्पूडम पोजेटिव थी। मैने फौरन उसके लिए डाट्स का एक नया डिब्बा उठाया और उनको साथ लेके उनके गांव मरौली पहुंच गया। और वहां हेल्थ वर्कर के हवाले कर दिया।

6 महीने गुजर गए। एक दिन मैं मरीजो में व्यस्त था कि अचानक एक लड़की जिसकी गोद में एक छोटी बच्ची सो रही थी, मेरे पास आई और बोली ''डॉक्टर साहब नमस्ते! पहचाना आपने?' मैं उसे नहीं जानता था, अब क्या जवाब देता। इतने मे पीछे से जब उसकी मां आई तो मै फौरन पहचान गया। उस लड़की को इतना स्वस्थ देख कर मैं दंग रह गया। मुझे बेहद खु ाी महसूस हुई।

मैने कहा ''अरे तुम तो बिल्कुल ठीक हो गई हो। अच्छा ये तुम्हारी बच्ची है। इसको टी0.बी0. से बचाव की दवा दी थी ना?'' मधु बोली' ''जी हॉ डॉक्टर साहब। आपने बताया था कि अगर मां को फेफडे की टी0.बी0. हो और उसकी बलगम में कीटाणु पाए जाये तो बच्चों को सबसे ज्यादा खतरा होता हैं। 6 साल से छोटे बच्चों को तो थोडी–2 दवा देनी पड़ती है 6 महीने तक। हमने इसको दिलवा दी थी। और भ्रुरू–2 मे मैने अपनी बच्ची को अपने साथ नहीं सुलाया न इसको चूमा। बस दूध पिलाके इसकी नानी के हवाले कर देती थी। और हॉ, ये मेरे पति है।''

उसके पति को देख कर मेरी सारी खुशी रफूचक्कर हो गई। मुझे अचानक बहुत क्रोध आया। मेरा दिल किया कि मै उनका गिरेवान पकड़ लू और जोर–जोर से चिल्ला कर उससे पूछू'' जब तुम्हारी बीवी और तुम्हारी फूल सी 5 महीने की बच्ची के जीवन की डोर टूटने वाली थी और इन दोनो को तुम्हारी सबसे ज्यादा जरूरत थी, तब तुम कहां थे ?''

लेकिन मैं चुप रहा।

मामूली सी बलगम की जांच

पवन कुमार,
सीनियर टी0.बी0. लैब सुपरवाईजर,
जनरल अस्पताल एम्स बल्लभगढ़
12 साल का टी.बी. का तर्जुबा

डाट्स प्रोग्राम की बलगम की प्रयोग ालाओं के आकंड़े इक्ट्ठा करने के सिलसिले में मैं चन्दन नगर बल्लबगढ़ से गुजर रहा था कि राजाराम के घर के सामने अनायास ही मोटरसाईकल की ब्रेक लग गई। दिल किया कि अपने पुराने मित्र को मिलूं। 1 साल हो गया था राजाराम को देखे हुए। टी0.बी0. के प्रोग्राम में काफी व्यस्त रहता हूं। सोचा आज राजाराम को हैरान कर दूंगा।

लेकिन जब दरवाजा खुला तो हैरान तो मै हो गया – राजाराम को देखकर। वो तो बहुत कमजोर हो गया था। बीमार सा दिख रहा था। वो पुरानी चमक व चंचलता बिल्कुल गायब हो चुकी थी। अपने मित्र की हालत देखकर मेरा मन भर आया। आंखे नम हो गई। मैने उससे पूछा कि "दोस्त तुझे क्या हो गया हैं ?"

राजाराम ने अपनी कथा कुछ यू सुनाई –

6 महीने पहले तक तो सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा था। बुखार से बीमारी का सिलसिला शुरू हुआ। हल्का–हल्का बुखार व खांसी चलने लगी। मैं काफी कमजोर भी होता गया। अब भी शरीर गिरा–गिरा रहता है। देह टूटती रहती हैं। शाम को सिर दर्द होने लग जाता है। दोपहर बाद थक के चूर हो जाता हूं। बहुत चिड़ चिड़ापन रहता है। घर वालों पर बात–बात पे चिल्लाने लग जाता हूं। कुछ भी अच्छा नहीं लगता हैं।

पहले तो अपनी गली के झोला–छाप डॉक्टर से काफी दवा–दारू किया। बाद में म ाहूर हकीम से पुड़िया इत्यादि खाई। वो हकीम कहता था मोतीझारा हैं। लेकिन हालत बिगड़ती ही गई। मेरा साला मुझे किसी नर्सिग होम में ले गया जहां खून – पै ाब के बहुत सारे महंगे – मंहगे टेस्ट हुए। पता लगा विडाल टेस्ट में टाईफाईड निकला है। महंगे–महंगे टीके लगे।

हार कर मैनें कुछ उधार लिया और आखिकार कारपोरेट अस्पताल में पहुच गया। वहां अल्ट्रा साउन्ड, सी टी स्केन इत्यादि किया गया। परन्तु ईलाज से रत्ती भर भी आराम नहीं आया। उधारी में और डूब गया मै।

मैने उसकी पूरी कहानी बड़े ध्यान से सुनी। फिर मैने राजाराम से कहा' '' लम्बा बुखार, लम्बी खांसी और वजन का घटना टी0.बी0. के लक्षण हैं।''

सारे जहान के महंगे–महंगे टेस्ट करवा डाले। हजारों रूपया पानी की तरह बहा दिया। लेकिन फेफड़े की टी0.बी0. का सबसे जरूरी टेस्ट अभी तक भी नहीं करवाया। "बलगम की जांच" देखने में बहुत मामूली सा टेस्ट दिखता हैं। लेकिन

यही सबसे महत्वपूर्ण हैं। सब सरकारी अस्पतालो में ये जांच मुफ्त उपलब्ध हैं।

मैने राजाराम को एक प्लास्टिक कि डब्बी थमा दी और उसके साथ मै बाहर खुले मैदान मे आ गया। वहां उसे मैने कहां **''अब जोर–जोर से खांसो, अपनी छाती के अन्दर से गाढ़ा–गाढ़ा बलगम निकालो और बार–बार इस डिब्बी में थूको '।**

फिर उसे मोटरसाईकल पर बैठाकर फौरन अपने बल्लबगढ़ सिविल अस्पताल की टी0.बी0. लैब में ले आया।

उसकी बलगम की डिब्बी पर मैने विधिवत लैब नम्बर डाला। मैने अपने दस्ताने व मास्क पहना। डब्बी को खोला और एक तीले से बलगम के गाढ़े हिस्से से कुछ बूंद उठाई और कांच की सलाइड के ऊपर बिछा दिया। उसे सूखने दिया। आधे घन्टे के बाद उस पर रंग बिरंगें कैमीकल सोल्यु ान डाले व तैयार किया। माईक्रो स्कोप के नीचे फिट किया। और उसमें टक–टकी लगाके काफी देर तक देखता रहा।

उसकी बलगम के नमूने की जांच करते हुए मै दु:खी भी था और खू ा भी। दु:खी – क्योकि राजाराम के बलगम में टी0.बी0. के कीटाणु भरे पड़े थे। खु ा – इसलिए कि कम से कम अब उसकी बीमारी का पता तो चला। मैने उसे समझाया **'' राजाराम तुम्हे टी0. बी0. है। तुम्हारी बलगम में टी0.बी0. के कीटाणु पाए गए हैं। ये 100 प्रतिशत सबूत है कि तुम्हे और कोई बीमारी नहीं बल्कि टी0.बी0. ही हैं। 6 महीने से यही तुम्हे सता रही हैं। खांमखा सब डॉक्टरो ने तुम्हारा कितना समय नष्ट कर दिया। तुम्हारा पैसा भी बरबाद कर दिया। बलगम में ये कीटाणु मिलना टी0.बी0. का यकीनी सबूत हैं।**

टी0बी0 का नाम सुनकर राजाराम बहुत परेशान हो गया।

मैने उसे हौसला दिया कि टी0.बी0. अब कोई जानलेवा या खतरनाक बीमारी नही रह गई। इसका ईलाज हैं। बस इसका ईलाज थोड़ा लम्बा हैं। सही दवा अगर लग के 6 से 8 महीनें खाई जाये तो सब मरीज ठीक हो जाते है। सरकारी अस्पताल में ये ईलाज मुफ्त मिलता हैं। कहीं भर्ती होने की जरूरत नहीं। बस घर पर ही रह के तुम ईलाज करते जाना।

अभी शुरू–शुरू में परिवार को बचाने के लिए तुम्हे बहुत साबधानी बरतनी हैं जैसे ''खांसी करते हुए मुंह पर रूमाल रखों, इधर–उधर कभी मत थूको। ज्यादा से ज्यादा समय बाहर खुले में यानी पार्क में, खेत में, आंगन में, छत्त पे या किसी पेड़ के नीचे रहो। छोटे बच्चों से दूर रहों। इलाज लग के 6 से 8 महीनें तक करना हैं। बीच में भाहर छोड़ के कहीं मत जाना।"

बस राजाराम का डाट्स का पहली श्रेणी का ईलाज भाुरू हो गया (टी0.बी0. न0. 1183/11)। बिना किसी उतार–चढाव के वो सही होता गया। 6 महीनों में बिल्कुल स्वस्थ हो गया। उसका एक पैसा भी खर्च नहीं हुआ।

पहला इलाज–सुनहरी मौका

विजय पाल
टी.बी.एच.वी., सरकारी अस्पताल
एम्स बल्लभगढ़ ।
हर साल करीब 600 टी.बी. रोगियों को ठीक करने की जिम्मेवारी उठाते हैं। सब मरीजों से मोबाइल के जरिये जुड़े रहते हैं। दिन रात उनकी सेवा में तत्पर रहते हैं। उनके घरों में जाकर टी.बी. की जानकारी फैलाते हैं। इन्हें टी.बी. उन्मूलन का जनून है।
मोबाइलः 9953482599

"अरे राजबीर, यह लड्डू किस खुशी में बाँट रहे हो " ?

"डाक्टर साहब मेरी शादी है जी "

"अरे वाह–वाह, बहुत–बहुत मुबारक हो भैया," मेरे मुँह से निकला।

लेकिन अगले ही क्षण मेरी जुबान लड़खड़ाई और ठिठकर जाम हो गई । मैं हकलाया, "अरे लेकिन....." राजबीर को तो टी.बी. थी। अभी डेढ़ महीने पहले ही इसकी बलगम की रिर्पोट में टी.बी. के कीटाणु देखे गये थे । इसका प्रथम श्रेणी का इलाज (टी.बी. नं. 564/10) अभी शुरुआती दौर में ही तो था । बलगम की दूसरी जाँच होने में अभी दो हफ्ते बाकी थे । भगवान जाने आज की तारीख में राजबीर की बीमारी किस स्थिति पर पहुँची है । यह अभी भी खांसी के साथ कीटाणु निकाल रहा हो । और दूसरों को संक्रमित करने में समर्थ हो। ऐसे में शादी कर अपनी पत्नी को इंफेक्शन के चंगुल में डालने की क्या जरुरत है ?

"राजबीर, तुम मजाक कर रहे हो क्या ?"

"नहीं, डाक्टर साहब अगले रविवार को मेरी शादी है । बहुत अच्छा परिवार मिला है । दहेज में नीली हीरो हॉडा की मोटरसाइकिल आ रही है जी ।"

"राजबीर ऐसा मत करो । शादी के चक्कर में तुम्हारा डॉटस का इलाज बीच में ही टूट जायेगा । **टी.बी. में पहली बार का इलाज ही सबसे अच्छा मौका होता है पूरी तरह ठीक होने का। पहली बार ही टीबी को जड़ से ठीक कर लेना चाहिए। इसे चूक जाओ तो पछताना पड़ता है।** अपनी दुल्हन को भी कहीं तुम बीमारी न दे दो। बस छः महीने रुक जाओ तसल्ली से लग के पहले अपना ईलाज पूरा कर लो । नीली बाईक बाद में चलाते रहना ।"

"डाक्टर साहब इतनी बढ़िया पार्टी मिली है । अब कृपया इसमें रुकावट मत डालो । लड्डू अभी खा लो । शादी का कार्ड आपको नहीं दे रहा – मेरी बीमारी के बारे में किसी से कुछ मत कहना जी ।" और राजबीर गायब हो गया और उसने ईलाज छोड़ दिया । कई महीनों बाद राजबीर ने फिर से आकर बलगम की जाँच कराई तो रिपोर्ट बहुत खराब आई । उसकी तबीयत काफी खराब थी । उसने बताया उसकी बहू भी उसको छोड़कर वापिस मायके जा चुकी है । हमने दूसरी श्रेणी का इलाज शुरु किया (टी.बी. नं0 179/11) । लेकिन सब बेकार । तीसरी पारी भी लेनी पड़ी (टी.बी. नं0 16/12)। अंततः उसे शायद लाईलाज टी.बी. बन गई।

जो जिन्दगी से खिलवाड़ करता है, जिन्दगी उससे खिलवाड़ करती है ।

दो नटखट बन्दर

शशि बाला
टी.बी.एच.वी., सिविल डिस्पेंसरी
ओल्ड फरीदाबाद

मेरा सपना "गरीब हो या अमीर, हर मरीज को एक जैसा इलाज मिले"

दोनों भाई जवान थे, हम उम्र थे, चंचल थे और ऊर्जा से भरे रहते थे। पहली बार जब वो दोनों मेरे ओल्ड फरीदाबाद के अनाज मण्डी वाले कम्पलैक्स अस्पताल में आये तो काफी उधम मचाया, मानो दो भारारती बन्दर अस्पताल में घुस आये हों । वे एक दूसरे को छेड़ रहे थे, बात–बात पर हँस रहे थे और आपस में नोक–झोंक कर रहे थे। संजीव किसी भी एंगल से बीमार नहीं लगता था । लेकिन उसकी बलगम की रिपोर्ट में टी.बी. के कीटाणु भरे पड़े थे । डा0 रमन कक्कड ने टी.बी. घोशित कर रखी थी। स्पूटम पॉजिटिव मरीज को पहले ही दिन सब सावधानियां बताना बहुत जरूरी कार्य होता है। इस धरती पर इससे ज्यादा जरुरी कार्य कोई नहीं हो सकता। जिस मरीज की बलगम में कीटाणु जाते हैं, उसे फौरन बहुत से उपाय करने पड़ते हैं ताकि किसी और को यह नामुराद बीमारी न लग जाए। इसलिए फौरन सब काम छोड़कर मैं उठ खड़ी हुई उन दोनों को बाहर खुले में पेड़ के नीचे ले गई और बेंच पर बैठने को कहा।

मैंने कहा, "संजीव मुँह पर रुमाल रखो। "

उसका भाई बोला, "घूँघट में रहा कर तू" और हँस पड़ा ।

मैंने समझाया, " ज्यादा से ज्यादा समय बाहर खुले में बिताओ जैसे पार्क में, खेत में, आँगन में, पेड़ के नीचे या छत पर ।"

उसके भाई ने चुटकी लेते हुए कहा कि, "तेरी खटिया बाहर तालाब के बीचों बीच बिछा दूँगा" तो मेरी भी हंसी छूट गई ।

"इधर उधर कभी मत थूकना" मैंने समझाया ।

"जी ऑटो से दिल्ली जाकर थूकूँगा ।" उसने कहा।

"गुप्ता जी के घर चला जाया कर थूकने" उसके भाई ने कहा।

" ाराब बन्द" मैंने कहा ।

उसका भाई चहक कर बोला, "आज से पूरा क्वार्टर मेरा ।"

संजीव का पहली श्रेणी का इलाज टी.बी. नम्बर 27/09 के अंतर्गत 6 महीने चला और वो ठीक हो गया। जब भी दवा लेनी होती तो वह दोनों इकट्ठे ही आते।

"तुम दोनो कुछ काम–वाम भी करते हो?'' मैने एक दिन उनसे पूछा।

एक बोला – "जी, ये तो बिल्कुल निकम्मा है । मैं इसे बैठाकर खिलाता हूँ ।"

दूसरे ने तपाक से कहा, " उल्टा बोल रहा है मैडम, धरती पे बोझ तो यह खुद है।"

दोनों भाई अपने छोटे से बंद से कमरे में बिना किसी सावधानी के साथ–2 रहते थे। न उनको बिमारी की कोई टें ान थी और न ही टी.बी. की सावधानियों की रत्ती भर परवाह। उनको इन छोटी–मोटी बातों की फुरसत ही नही थी । वो तो बस एक दूसरे में मस्त थे। इसका नतीजा यह हुआ कि दूसरा भाई हरिओम भी लपेटे में आ गया। उसका भी इलाज टी. बी. नम्बर 760 / 10 के तहत चला। मैंने दोनों भाईयों को बार–बार समझाया बुझाया लेकिन ये दोनों नि चंत रहते और मस्ती से खाते–पीते। हरिओम तो भाराब कुछ ज्यादा ही लेता रहता था। फलस्वरूप उसकी हालत इलाज के बावजूद नहीं सुधरी। नवम्बर 2010 में उसको दूसरी श्रेणी का कोर्स टी.बी. नम्बर 1449 / 10 चलाना पडा।

एक दिन मेरी स्कूटी खराब थी । मैं मथुरा रोड पर परे ाान खड़ी थी । जो भी ऑटो आता भरा होता, रुकता ही नहीं । एक ऑटो रुका सवारियों से खचा–खच भरा पडा था। फिर भी ड्राईवर ने उसे रोका और मुझे सिमट कर बैठने का पूरा मौका दिया–फिर बोला, "मैं रोज आपको इसी समय ले लिया करूंगा मैडम। "

''अरे संजीव'', मैं हैरान थी ''ये ऑटो तुम्हारा है?",

"जी नहीं मेरा है । मैंने इसपर रहमकर इसको किराये पर दिया हुआ है। "दूसरा भाई हरीओम बोला जो कि वहीं आगे ड्राईविंग सीट पर चिपककर बैठा था । और फिर दोनों हंसने लगे। हे भगवान ! ये दोनों कभी अलग भी होते हैं?

मैं सोच रही थी कि क्या भाईयों में इनता प्यार भी संभव है?

वक्त बीतता गया। मौसम ने करवट ली। बीमारी के बादल और गहरा गये । हरिओम के दूसरी पारी के इलाज को तो जैसे ग्रहण लग गया। किसी न किसी वजह से बार–बार दवा का नागा हो जाता । कभी दवा पच नहीं पाती। कभी दारु ज्यादा पी लेता । कभी बुखार बढ़ जाता तो कभी खाँसी में खून आ जाता। उसकी हालत तेजी से बिगड़ती गई। निरा ाा भी साफ झलकती थी। उनके स्वभाव से वो सहज खु ाी तो धीरे धीरे नदारद होती जा रही थी ।

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था । 07.05.2011 को हरिओम ने आखिरी सांस ली।

छोटे भाई संजीव के लिए तो यह एक बहुत बड़ा धक्का था। नतीजा वो फिर से बीमार हो गया। उसको दूसरी बार टी.बी. का इलाज भारू करना पड़ा टी.बी. नम्बर 197 / 12 के तहत।

भगवान करे अब वह पूरी तरह स्वस्थ हो जाए। कहते हैं कि समय के साथ–साथ सब घाव भर जाते हैं।

आपसी प्यार उनकी भाक्ति थी, पर आज वही उनकी सबसे बड़ी कमजोरी सिद्ध हो रहा था। क्योंकि वही टी.बी. के संक्रमण का कारण बना ।

"अरे 6 से 8 महीने तक पूरा इलाज करके तो देखो"

फरिश्ता

शारदा रानी
टी.बी.एच.वी., प्राइमरी स्वास्थ्य केन्द्र, पल्ला।
पिछले 5 साल में अनेकों टी.बी. रोगियों से गहरा आदान प्रदान किया है । हर मरीज की पूरी बात तसल्ली से सुनना, उसका वि वास जीतना महत्वपूर्ण है ताकि वह भी हमारी सलाह माने । मरीज के साथ की गई गलती तो गलती है, लेकिन कागजों व रिर्पोटों में गलती के कोई खास मायने नहीं।

साठ साल के बुर्जुग मिश्री लाल की हालत बहुत सीरियस थी । टूटी फूटी चारपाई पर बेसुध लेटा पड़ा था और कराह रहा था । इतना दुबला कि जैसे हड्डियों का एक ढांचा, उठने में भी असमर्थ था । उसका टूटा–फूटा कमरा ऐसे उजड़ा पड़ा था कि मानो दस साल से वहाँ कोई रह ही न रहा हो । कमरे में सिवाय चारपाई के और कोई भी सामान नहीं था । न कोई बर्तन, न कोई कपड़ा । बस दीवार पर एक कील पर पॉलीथीन की थैली लटकी पड़ी थी, जिसमें सूखे सड़े सेब दिख रहे थे । बीमारी और गरीबी दोनों की यह चरम सीमा थी । ऐसे में कहाँ से तो ये रोटी खायेगा और कौन इसकी दवाईयाँ हमारी डिस्पेन्सरी से लायेगा, और कौन इसे खिलायेगा । मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था । इसी उधेड़ बुन में मैं काफी देर तक उस कमरे में खड़ी रही और सोचती रही कि यह मरीज तो नहीं बचेगा ।

इतने में उसकी पत्नी जो खुद एक कमजोर सी बुढ़िया थी, अन्दर आई, "नमस्ते डॉक्टर बेटी"। मैंने जवाब दिया, "नमस्ते माता जी । " खैर उसके बाद मैंने डाट्स के टी.बी. के इलाज के बारे में सारी बातें समझाई व मरीज व उसके सारे परिवार का सारा विवरण कागजों में दर्ज किया । क्योंकि मिश्री लाल की बलगम की रिपोर्ट में कीटाणु आये थे, इसलिये मैंने पूछा, "आपके यहाँ छोटे बच्चे तो नहीं हैं ?" दोनों ने कोई जवाब नहीं दिया । मैंने फिर पूछा ''माता जी आपके बच्चे तो नहीं हैं ?" । बुढिया ने फफक–फफक कर रोना भुरु कर दिया, और बस रोती ही रही । चुप होने का नाम ही नहीं ले रही थी । बाद में बोली, "बेटी, बच्चों की तो मौज है। भरा पूरा खु ाहाल परिवार है हमारा, लेकिन मनहूस टी.बी. का नाम आते ही उन सबने हमें घर से निकाल बाहर किया है। तभी तो इस कमरे में खटिया डाली है। "

मैं सोचती रही कि वो कैसे बच्चे होंगें जिन्होने ऐसे नाजुक समय पर अपने बूढ़े माँ–बाप को सहारा देने के बजाए मौत की खाई में ढकेल दिया है। अगले दिन अपनी पल्ला की डिसपेन्सरी की खिड़की में से मैं बाहर देख रही थी कि मेरी नजर उस बुढिया पर पड़ी जो एक टूटे फूटे साइकिल के कैरियर पर बैठकर आ रही थी । साइकिल एक 30 या 35 वर्श का आदमी चला रहा था । मैंने भाुक्र मनाया कि उनके एक बेटे को तो अक्ल आई । मिश्री लाल टी.बी. नं0 975/10 का पहली श्रेणी का टी.बी. की दवा का एक पत्ता निकाल कर तुरन्त बुढिया को थमा दिया । बस उसके बाद इसी तरह हफ्ते में तीन बार उनका वही बेटा अपनी टूटी फूटी साइकिल पर बुढिया को बैठाकर लाता और वे दवा ले जाते ।

मिश्री लाल की बलगम भी वही साइकिल सवार दे जाता । जैसे तैसे समय बीतता गया और करीब 6 महीने के बाद मैं उनके कमरे में दौबारा गई तो हैरान रह गई । मिश्री लाल बाहर बैठा मस्ती से सुड़क–सुड़क कर गरमा गर्म दूध पी रहा था। वह काफी स्वस्थ लग रहा था । अम्मा मेरे लिए चाय बना लाई । हमने खूब बातें की । मैं बहुत खु ाी महसूस कर रही थी – मानों मेरी लॉटरी लग गई हो। जब भी कोई सीरियस मरीज ठीक होता है तो अपार संतोष व खुशी प्राप्त होती है।

बातों बातों में मैंने पूछा, "अम्मा वो तुम्हारा बेटा नजर नहीं आ रहा, वो साइकिल वाला "। वो बोली, '' वो हमारी बहुत सेवा करता है। हमारे लिए वो फरि ता है, और बेटों से भी बढ़कर है। वो हमारा मालिक मकान है।''

मायके जाऊँगी

रेखा रानी
टी0.बी0. हेल्थ विजिटर,
डाट्स सेन्टर, जच्चा–बच्चा अस्पताल,
सैक्टर–30, फरीदाबाद

पिछले 6 साल से अपने इलाके के हर टी.बी. रोगी की दिलो जान से सेवा की है ताकि वो रोग मुक्त हो जाऐं, और हमारा देश इस बीमारी पर विजय पा सके

सिंबुल मेरे पास 2010 की एक सुबह में आई थी। उसे टी0.बी0. की बीमारी ने बुरी तरह जकड़ रखा था। तरह–तरह के उल्टे सीधे इलाजों के चक्कर में बहुत समय व पैसा बरबाद हो चुका था। परन्तु उसकी हालत बिगडती गई थी। किसी हकीम या झोला छाप डाक्टर ने उसे यह नहीं बताया कि उसे टी0.बी0. हो चुकी थी। आखिरकार सरकारी अस्पताल में आते ही उसकी बलगम की जांच व एक्सरे किए गए तथा फोरन टी0.बी0. धोषित हो गई ।

सिंबुल को मैने विधिवत पहली श्रेणी का इलाज दिया (टी0.बी0. न0. 636/10)। लेकिन कई हफ्तों के ईलाज के बावजूद उसकी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। उसके ससुराल वाले बहुत चिन्तित थे। वे उसे दिल्ली के मेहरौली टी0.बी0. अस्पताल ले गए व वहां भर्ती करवा दिया।

कई दिनों भर्ती रहने के बाद सिंबुल मेरे पास 30 सैक्टर के अस्पताल में वापिस आई। मेहरौली के डाक्टरो ने अब उसे दूसरी श्रेणी का ईलाज चालू किया गया था। मैने उसे सही टीके व दवाई देना भ्रारू कर दिया (टी0.बी0. न0. 776/10)। कुछ हफ्तो में उसकी हालत सुधरने लगी। मुझे बहुत खु ी थी कि मेरी यह मरीज अब खतरे से बाहर आ चुकी है।

अचानक एक दिन उसने मुझे आके कहा 'मै 10–12 दिन के लिए अपने मायके जा रहीं हूं। मेरी चचेरी बहन की भ्रादी है। मेरा भाई मुझे लेने आया है।' मेरा दिल बैठ गया ।

मैने उसे तथा उसके सारे परिवार को बिठा के अच्छी तरह समझाया कि 'मरीज के लिए ईलाज से जरूरी दूसरा कोई काम नहीं होता। बस लग के अपना ईलाज पूरा करो। बाकी सारे समाजिक काम तो बाद मे भी होते रहेगें । जान है तो जहान है। और फिर कहीं सक्रामक रोग परिवार के किसी दूसरे सदस्य को लग गया तो ? ईलाज बीच में छोड़ना एक भयंकर भूल होती हैं। टी0.बी0. में छोटी –छोटी गल्तियों के भयंकर परिणाम होते है। ईलाज बीच में गडबड़ करने का कई बार मतलब होता है – मौत को बुलावा देना और अपनी पुश्तो में इस रोग के बीज बोना'। लेकिन किसी ने मेरी एक न सुनी। सिंबुल अपने मायके चली गई।

बाद में वही हुआ जिसका मुझे डर था। उसका ईलाज टूटं गया। डाट्स की गाड़ी अपनी पट्री से उतर गई। बहुत दिनों बाद सिंबुल अपने ससुराल वापिस आई। लेकिन उसकी हालत बहुत गम्भीर थी।

18.09.10 को सिंबुल प्रलोक सुधार गई ।

आज भी मेरे मन में रह–रहके टीस उठती है। मरीज को भवनाओं में बहकर, किसी की शादी ब्याह के चक्कर मे, राखी, होली या दीवाली जैसे त्यौहारों के चलते या किसी रिश्तेदार के जीने–मरने के बहाने अपना शहर छोड़कर कतई नहीं जाना चाहिए। बस टिक के 6 से 8 महीने अपना पूरा ईलाज करना चाहिए और पूरी तरह स्वस्थ हो जाना चाहिए। मरीज को प्रण लेना चाहिए कि वो शहर छोड़ के कही नही जाएगा। दूसरी सामाजिक जिम्मेदारिया बाद में निभति रहेगी।

ओझा की गारण्टी

विजय पाल
टी.बी.एच.वी., सरकारी अस्पताल
एम्स बल्लभगढ़

टी0बी0 न. 246/10 के तहत मेरे यहां सरिता का डाट्स का ईलाज चालू हुआ था। वो एक बहुत ही हसंमुख व प्रतिभा ाली लड़की थी। पढ़ने लिखने की बहुत भौकिन थी तथा हमे ा मुझसे अपनी बीमारी के बारे में सवाल–जवाब करती रहती थी। बातों बातो में मैने उसे बताया की उसकी बलगम में टी0.बी0. के कीटाणु पाए गए हैं। उसे फेफड़े की टी0.बी0. की बीमारी लग गई हैं। उसने मुझसे टी0.बी0. की बीमारी को फैलने से रोकने के उपाए पूछे। मैने उसे समझाया कि ''खांसी करते हुए मुंह पर रूमाल रखो, इधर–उधर कभी मत थूको। ज्यादा से ज्यादा समय बाहर खुले में यानी पार्क में, खेत में, आंगन में, छत्त पे या किसी पेड़ के नीचे रहो। छोटे बच्चों से दूर रहों। इलाज लग के 6 से 8 महीनें तक करना हैं। बीच में भाहर छोड़ के कहीं मत जाना । दवा से पै ाब लाल आता हैं जोकि दवा का रंग है। चिन्ता मत करो।''

उसने सारे उपाए बहुत ध्यान से सुने और याद कर लियें – बल्कि तोते की तरह रट लियें। जब भी दवा खाने आती तो मेरे बाकी सभी मरीजों को भी बैठा कर बार–बार सुनाती व उन्हें याद करने को कहती। मैं बहुत खु । था कि ये लड़की बहुत समझदार हैं और जल्द ही उसकी बलगम से कीटाणु साफ हो जाएगें तथा ये ठीक हो जाएगी।

अभी उसके इलाज के 2 महीने भर ही पूरे हुए थे कि उसने अपना डाट्स का ईलाज बन्द कर दिया। मैं उसके घर गया। उसकी मां ने मुझे बताया की उसके पापा उसको लेके मेवात में गए है – झाड़–फूंक के लिए। उसकी मम्मी ने कहा कि हमारी बेटी को तो टी0.बी0. की बीमारी है ही नहीं । हमें किसी सयाने बुजुर्ग ने बताया हैं कि ये तो सारा उपरी चक्कर हैं । कोई भूत प्रेत की आत्मा हमारे परिवार को परे ान कर रही है। मेवात मे 15 हजार रूपये खर्च तो होगें लेकिन झाड–फूक से इस मुसीबत से हमे ा के लिए छुटकारा मिल जाएगा। गारन्टी दी हैं ओझा ने।

मै दंग रह गया। मै कुछ न कह सका। बस चुप–चाप अपने घर आ गया। पूरी रात मै सो न पाया। सुबह–सुबह मै दोबारा गया तथा सरिता व उसके पापा को समझाया। मैने कहा की "तुम्हारी बलगम में टी0.बी0. के कीटाणु पाए गए है। 100 प्रतिशत तुम्हे टी0.बी0. ही हैं। कोई ऊपरी चक्कर वक्कर नहीं है। इस रूढ़ीवादी सोच को छोड़ो और चलो, अपनी दवाई नियम से खाओ। बस 4 महीनें और बचे हैं इलाज के। बिल्कुल ठीक हो जाओगी। "

मुझे लगा सरिता को मेरी बात समझ में आ गई हैं और वो अपना ईलाज फिर से चालू कर देगी। उसने मुझे कहा कि "भैया आप नि चत होकर जाओ, कल सुबह मैं पक्का अपनी दवा लेने आ जाऊंगी।" कितने दुःख की बात है कि चाहते हुए भी सरिता डाट्स सेन्टर नहीं पहुचीं । उसकी गली के एक अन्य मरीज ने मुझे बताया कि उसके रूढीवादी माता–पिता व रि तेदारों ने उसे जबरदस्ती रोक दिया था। सरिता ने दवा के लिए बहुत जिद्द करी। वो बहुत रोई धोई । लेकिन सब बेकार।

कुछ महीनों बाद सरिता चल बसी। आज भी मुझे बहुत दुःख होता हैं कि मैं उस परिवार को सही तरीके से समझा न पाया। सदियों से चला आ रहा अन्धवि वास क्या इतनी जल्दी दूर हो सकता है ?

खैर, अभी हाल में 5 मार्च को चन्दा नामक एक दूसरी मरीज भी टी0.बी0. के ईलाज के लिए मेरे पास आई हैं। ये भी भूत–प्रेत के चक्करो में करीब 20 हजार रूपयें उड़ा चुकी है। लेकिन अब इसकी आंखे खुल चुकी हैं और इसने कसमे खाई है कि ये डाट्स का ईलाज कतई नहीं छोड़ेगी। देखो आगे–आगे क्या होता!

कितने भार्म की बात है कि आज के आधुनिक युग में भी इस बीमारी के प्रति साधारण ज्ञान का प्रसारण नदारद हैं और टी0.बी0. के बारे में आज्ञानता सरिता जैसी न जाने कितने मरिजों की जिन्दगी तबाह कर रही हैं । सरिता के परिवार के जीवन में इस कष्ट का मूल कारण क्या हैं ? टी0.बी0. ? या इसके बारे में अज्ञानता ?

अनाम

हरबन्स कपूर
एस.टी.एस. 10 साल
जनरल अस्पताल एम्स, बल्लभगढ़
भूतपूर्व सूबेदार / फारमेसिस्ट
भारतीय सेना''

हर मरीज का जीवन कीमती होता है । हर टी.बी. के मरीज के अन्तःकरण में घटनाक्रम की एक बहुत दर्दनाक कहानी छिपी रहती है । पिछले दस सालों से अनेकों मरीजों से वार्तालाप करके उनकी भावनाओं को समझने की कोि ा ा करता रहा हूँ । एकबार जो उसकी भावनाऐं समझ ली तो समझो उसका वि वास जीत लिया । एक रि ता कायम कर लिया। फिर वो आपकी हर बात को मानेगा । जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक टी.बी. का मरीज किसी न किसी के बहकावे में आकर कोई न कोई गल्ती कर बैठेगा । जिसके फलस्वरुप बीमारी से मुक्ति नही पा सकेगा ।

कहानी सच्ची हो या झूठी कहानी तो कहानी होती है । आमतौर पर टी.बी. गरीब व अनपढ़ लोगों में पाई जाती है । जिन्हें समझाना और भी कठिन होता है। **इस बीमारी में छोटी–छोटी गलती के भयंकर परिणाम होते हैं । बीमारी के लक्ष्णों को छुपाना, लम्बे समय तक लक्ष्ण होते हुए भी टी.बी. का शक न करना, बलगम की जाँच न कराना, झोलाछाप, अधकचरे डॉक्टरों के चक्कर में पड़े रहना, तंत्र मंत्र के अंध विश्वास में पड़कर बीमारी बढ़ाते रहना, सही डा0 के पास जाकर अपना निदान ना करवाना, बलगम में कीटाणु होने पर भी परिवार से सावधानी न बरतना, टी.बी. की पहचान हो जाने पर भी इस डर से इलाज न कराना कि लोगो को पता चल जायेगा, टी.बी. का इलाज अधूरा छोड़ देना इत्यादि – दिखने में मामूली भूलें लगती हैं। परन्तु ये सब जानलेवा हो सकती हैं।**

भारत का टी.बी. प्रोग्राम (RNTCP) काफी अच्छा होते हुए भी चुनौतियों से भरा पड़ा है । जिले की टीम मेहनती, ईमानदार और मददगार हो तो कार्य करना भी आसान और नतीजे भी बढ़िया होते हैं, और ज्यादा से ज्यादा मरीज टी.बी. मुक्त हो जाते हैं ।

इतना सब करने के बावजूद भी अगर मरीज इलाज अधूरा छोड़ जाता है और मृत्यु को प्राप्त होता है तो हमारा कार्य अधूरा लगता है । कोई माने या न माने, नाकामी होने पर हमें भी बहुत दुख होता है । आने वाले समय में कुछ सख्त निर्णय लिये जायें ताकि हर मरीज ठीक हो सके ।

यह तो होना ही था

सत्यबीर सिंह नर्वत
एस.टी.एस., बी.के.
सिविल अस्पताल फरीदाबाद
''पिछले दस सालों में हजारों टी.बी. के मरीजों से निकट सम्बन्ध''

टूटे–फूटे मकान को मैने पहचान लिया । कीचड़ भरी गांव की गली के एक कोने मे मैने अपनी रॉयल इनफिल्ड मोटर साईकिल खड़ी कर दी। चिटकनी से दरवाजा खट खटाया।

एक अधेड़ उम्र की औरत ने दरवाजा खोला। उसके हाथ आटे से सने हुए थे। जाहिर है वे रोटी बना रही थी। और मैने इसमे खलल डाल दिया था। मै थोड़ा झिझका । –'' राम लाल है क्या ? ''

"आप कौन ?" उसने पूछा

"मैं होडल अस्पताल से आया हूं । रामलाल ने अपनी टी0.बी0. की दवा जो लेना बन्द कर दी है। उस सिलसिले मैं। "

''अन्दर आ जाओ, भैया। इन्हे समझाओ । हम तो थक लिये। ऐसा करो भईया, पहले एक गरमा–2 रोटी खाओ ''

मै नीचे पालती मार कर बैठ गया। सबसे पहले मेरी नजर आलू की सब्जी के पतीले पर पड़ी । मेरे मुंह मे पानी भर आया। अचानक मुझे अपना बचपन याद आ गया। जब मेरी मां ऐसे ही नीचे बैठा कर चूल्हे पर रोटियां सेकती थी। और प्यार से ही मुझे खिलाती थी।

उसकी भारी –भरकम आवाज ने मुझे चौकाया '' मुझे जब टी0.बी0. की बीमारी है ही नही तो मेरे पीछे क्यों पड़े हो ?" रामलाल ने कहते–2 जोर से खांसी करी और वही चूल्हे के पास थूक दिया। मेरी तरफ धूर के देख रहा था कि जैसे कोई दु मन घर आ गया हो।

रामलाल की बलगम में तो टी0.बी0. के कीटाणु मिले थे। टी0.बी0. तो 100 प्रतिशत थी। बार–2 समझाया जा चुका था। फिर भी न तो मुँह पर रूमाल रखा था। ना ही इधर–उधर थूकना छोड़ा था।

मुझे मालुम है कि बीमारी के कारण मरीज का मूड अक्सर खराब ही रहता है । जैसे–तैसे अपने गुस्से पर काबू पाते हुए उस से कहा।

''बलगम मे टी0.बी0. के कीटाणु पाये जाना यानि टी0.बी0. की पुष्टि । इसमें कोई शक नही आपको टी0.बी0. हैं। ईलाज मे गडबड़ करने से बहुत नुक्सान हो सकता हैं । आप अपने जीवन से तो खेल ही रहे हो परिवार के लोगो को भी खतरे में डाल रहे हो। ईलाज बीच में छोड़ना जान लेवा भी हो सकता है। पहली ही बार टी.बी. को पूरी तरह जड़ से ठीक कर लेना चाहिए। वरना बहुत परेशानी खड़ी हो जाती है।''

"आपकी दवा का सरकारी डिब्बा खुला पड़ा है । एक महीने की दवा तो आप खां भी चुके हो। कुल पांच महीने और । ये लो एक दवा का पता अभी की अभी ले लो। अभी भी कुछ नही बिगड़ा हैं। "

उससे चुपचाप दवा का पत्ता मेरे हाथ से ले लिया। इतने मे उस औरत ने थाली परोस कर मेरे सामने रख दी थी। फिर एक गिलास पानी रामलाल को देते हुए बोली, "दवाई ले लो ।"

रामलाल ने दवा का पत्ते मे से दवा की सातों गोली एक –2 कर के निकाली मुठ्ठी में भरी और देखते ही देखते आग में झोक दी।

मैने खानों की थाली हटायी और उठ खड़ा हुआ। मेरा पेट भर गया था। बाहर आकर जोर से मोटर साईकिल की किक मारी। और गुस्से से तमतमाता हुआ वहा से निकल लिया।

करीब करीब दो महीने के बाद वह औरत मेरे पास अस्पताल मे आयी। ''भैया जरा चलो, रामलाल को देख लो। ''

मै उसे मना न कर पाया । ना चाहते हुए भी उस औरत के पीछे –2 बाहर अस्पताल के मैन गैट तक चलता चला गया । वहां आटो में लेटा पड़ा था रामलाल। सूख कर कांटा हो गया था। टी0.बी0. ने जैसे उसे अन्दर ही अन्दर बिल्कुल खोखला कर दिया था। उसकी हालत बहुत गंभीर व दयनीय थी।

''यह तो होना ही था '' मैं बड़बडाया । उसका एकलौता बेटा जो उस समय कॉलेज में बी0.एस0.सी0. कर रहा था, बिनती भरी निगांहो से मुझे देख रहा था। जो कर सकता था मैने किया।

बस कुछ ही दिनों में रामलाल की जीवन लीला समाप्त हो गई।

तीन देवियाँ

शशि बाला
टी.बी.एच.वी., सिविल डिस्पेंसरी
ओल्ड फरीदाबाद

मेरा सपना "गरीब हो या अमीर, हर मरीज को एक जैसा इलाज मिले"

मनोज की हालत कुछ ज्यादा ही बिगडी हुई थी। गलत– ालत प्राइवेट डाक्टरों के चक्कर में बहुत टाईम व रूपया खराब कर चुका था। बलगम की जांच में कीटाणु थे यानि संक्रमण वाली टी.बी. थी।

हाल ही में उसका इलाज टी.बी. नम्बर 373/08 के अंतर्गत हमारे ओल्ड फरीदाबाद के अस्पताल में चलाया गया था। एक दिन जब मैं रूटीन विजिट पर उसके घर पहुंची तो देखा वह एक तंग सी गली में अपने किराये के छोट से घुटन भरे कमरे में लेटा हुआ था, न कोई खिडकी न कोई रो ानदान। मैंने उसे उठने को कहा । उसको लेकर फौरन उसकी छत पर चली आई – खुले में । वहाँ बैठाकर मैंने उसको समझाया कि बन्द कमरे में रहने से तुम्हारी खाँसी के कीटाणु तुम्हारे बच्चों को संक्रमित कर देंगें । वो भी बीमार पड़ जाएंगे । अतः तुम अपनी चारपाई यहाँ ऊपर ले आओ खुली हवा में । यहीं छत पर डेरा डालो कुछ दिन के लिये । जब तक बलगम की रिपोर्ट में कीटाणु साफ नहीं हो जाते। मनोज की बलगम की 3 प्लस रिपोर्ट आए हुए 20 दिन हो चुके थे । अभी तक किसी डा0 या स्वास्थ्य कर्मचारी ने इसे इतना भी समझाने का कश्ट नहीं किया था? यह कदम तो इसके इलाज का एक मूलभूत हिस्सा है । मैं यह सोचकर सिहर उठी कि कहीं पहले ही मनोज अपने बच्चों को टी.बी. का उपहार दे तो नहीं चुका? कहीं मुझे आने में देर तो नहीं हो चुकी? इसी सोच विचार में उलझे हुए मैंने पूछा , " मनोज तुम्हारे बच्चे कितने हैं।''

वह बोला – ''एक बेटा और तीन देवियाँ ।"

उसकी पत्नी बोली, "इन्हें अपनी तीन बेटियों से बहुत प्यार है। बेटी तो देवी समान होती ही हैं। इनको एक मिनट भी अपने से दूर नहीं करते जी ये। स्कूल से आते ही चारों बच्चे इनको चिपट जाते हैं। बस आते ही ये चारों को होमवर्क करायेंगें । हमारा एक ही सपना है चारों बच्चों को अच्छी ि ाक्षा दिलवाना।"

मैंने उससे कहा, "उन चारों बच्चों को स्कूली ि ाक्षा के बजाए एक दूसरी ि ाक्षा की कहीं ज्यादा जरुरत है, आज।'' उसने कहा, "जी? हम समझे नहीं।" मैंने कहा, "तुम्हारे परिवार के लिये हिन्दी, अंग्रेजी या गणित से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण एक दूसरा विशय है – टी.बी. रोगी क्या उपाय करे कि उसके बच्चों में बीमारी के बीज न पड़ने पाऐं।" मीयाँ बीवी अवाक से खड़े रहे जैसे मेरी बात को समझने की कोि ा ा कर रहे हों। मैंने सख्ती से बोला कि, "फिलहाल तो 2 महीने उनसे उचित दूरी बनाकर रखो। उनको इस बिमारी से बचाओ।"

मनोज बोला, "जी! जैसा आप कहोगे वैसा ही करुँगा । मुझे बहुत चिंता है। 3–3 बेटियों का बोझ है मेरे ऊपर।"

मुझे उसपर बहुत तरस आया लेकिन टी.बी. के कीटाणु को नहीं। दिनांक 4–8–2008 को मनोज चल बसा। मनोज के जाने के कुछ दिनों बाद उसकी बेटी नेहा का इलाज टी.बी. नम्बर 890/08 भुरू हो गया। फिर अगले वर्श 7 साल की अंजली ने भी हमारे विभाग में दस्तक दी। टीबी नम्बर 59/10 के तहत उसका भी इलाज किया।

दिनांक 26–6–2011 को मनोज की छोटी बेटी गुंजन की दवा के डिब्बे पर भारी मन से मुझे टीबी नम्बर 984/11 लिखना पड़ा। इतना ही नहीं अभी पिछले महीने गुँजन का दूसरी पारी का इलाज टीबी नम्बर 326/12 के तहत चलाया गया है।

हे भगवान ! यह सिलसिला कब थमेगा !

आखिरी कोशिश

प्रियंका शर्मा
टी.बी.एच.वी., ई.एस.आई. डिस्पेन्सरी,
डबुआ कालोनी, फरीदाबाद
सात साल का अनुभव
"मेरा लक्ष्य भारतवर्ष को आगामी पीढ़ी के लिये क्षयरोग से मुक्त करना।

मैं ऊब चुकी थी । लाली का घर मेरे घर से कोई ज्यादा दूर नहीं था। कई दिन हो चले थे। आते जाते बार–बार समझा चुकी थी लेकिन वो थी कि टस से मस नहीं हो रही थी । मैंने अपनी उकताहट पर जैसे तैसे काबू पाया और ठान लिया एक आखिरी कोि । ।और करुँगी । आज मैं इस मरीज को मना कर ही छोड़ूंगी ताकि यह टी.बी. का इलाज करवाये और ठीक हो जाये । सो, मैं बड़े इतमिनान से उसके पास बैठ गई । फिर मैंने उसे समझाने का कार्यक्रम भाुरु से भाुरु किया, " अच्छा लाली, तुम्हें खाँसी कब से है? "

लाली, "जी, चार महीने से " ।

मैंने पूछा, "बुखार? "

लाली, "तभी से, यानि चार महीने से ही" ।

मैने कहा, " ाबा । लाली। यह बताओ तुम्हारा वजन कितना है आज?"

लाली, "जी, आपके कहने पर ही पिछले हफ्ते आटे की चक्की वाले काँटे पे देखा था, 33 किलो आया था" ।

मैंने फिर पूछा, "पहले कितना हुआ करता था?"

लाली ने कुछ सोचते हुए उत्तर दिया, " जी 45–50 किलो हुआ करता था । ऐन ठीक–ठाक थी मैं ।"

मैंने हिसाब लगाया, " यानि 12 किलो घट गया है ।"

लाली, "जी" ।

मैंने लाली को समझाते हुए कहा, "लम्बी खाँसी, लगातार बुखार, लगातार वजन का घटना तो टी.बी. के होने का शक पैदा करता है । तो तुम्हारे केस में टी.बी. का शक करना चाहिए न ।"

लाली, "जी, टी.बी. का भाक तो बनता है ।"

मैं, "जब मुझे भाक हुआ तभी तो मैंने पिछले हफ्ते आपको बीके अस्पताल भेजा था । ठीक?"

लाली, "जी, बिल्कुल ठीक।"

मैंने पूछा, "वहाँ क्या हुआ?"

लाली ने जवाब दिया, "डा0 साहब ने एक्सरे कराया और बोले उसमें बड़े–बड़े टी.बी. के धब्बे आये हैं । और बलगम की जाँच हुई तो बताया कि उसमें टी.बी. के कीटाणु पाए गए ।"

मैंने लाली को उसकी बलगम की रिपोर्ट दिखाते हुए कहा, "यह रही तुम्हारी रिपोर्ट । इसमें लाल पैन से 3 प्लस लिखा हुआ है, देखो । "

लाली ने गौर से देखते हुए कहा, "जी, दिख रहा है । लाल रंग तो दूर से चमक रहा है ।"

मैंने कहा, "लाल रंग यानि खतरे का नि ाान । तुम्हें टी.बी. तो 100 प्रति ात है ही, बल्कि यह फैलने वाली टी.बी. है । अगर तुम सही इलाज नहीं कराओगी तो औरों को बीमारी बाँट दोगी । तुम्हारे बच्चों व मिलने वालों को इन्फैक ान हो सकता है ।"

लाली घबरा गई, "जी, तो इलाज करा दो जी मेरा । "

मैंने उसका हौंसला बढ़ाते हुए कहा कि, " ाबा ा ! लाली कुछ महीने दवा खानी है । कल सुबह सारी रिर्पोटें लेकर मेरी डबुआ कालोनी वाली डिस्पेन्सरी में पहुँच जाना । बस बाकी मेरी जिम्मेवारी है ।"

अगले दिन मैं उसका इंतजार करती रही पर लाली नहीं आई । फिर किसी ने बहला फुसला दिया होगा । गई होगी किसी हकीम या गल्त डा0 के चक्कर में । इतना जिद्दी मरीज मैंने जीवन में नहीं देखा था । मैंने हार मान ली।

कई महीनों बाद.....

मैं अपनी डबुआ कालोनी की छोटी ई एस आई वाली डिस्पेन्सरी में बैठी थी। दोपहर के 12 बजे थे, आज काम भी कुछ कम था । इतने में टी.बी. की मरीज सुमन (टी.बी. नं0 1420/11) आई । सुमन 22 साल की थी । भाादी के दो साल हुए थे कि इसे टी.बी. हो गई और इसके पति ने इस घर से निकाल बाहर किया । इस बेचारी को वापिस मायके आना पड़ा, जहाँ इसकी माँ जो सुना है, खुद बहुत बीमार रहती है जैसे कैसे इसे रख रही है । दोनो माँ बेटी बहुत दुखी रहती हैं । सुमन में एक खूबी थी। वो बहुत ही आज्ञाकारी लड़की थी। जो भी मैं बताती उसका बहुत लगन से अनुपालन करती।

उसने मुझसे पूछा, "दीदी, और कितना इलाज चलेगा मेरा? अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ । खाँसी भी गायब, बुखार भी नहीं है अब । मैं बिल्कुल तंदरुस्त हो गई हूँ । "

मैंने उसका रिकार्ड चैक किया, "6 महीने का इलाज पूरा होने में केवल 14 दिन बाकी हैं । बहुत अच्छे। तो अब क्या करोगी? पति के पास वापिस जाओगी या यहीं रहोगी मायके में?"

"दीदी वापिस तो कभी नहीं जाऊंगी । मेरे बुरे वक्त में जब उसने मेरा साथ नहीं दिया तो ऐसे आदमी से क्या रि ता रखना, बस यहीं रहकर कोई नौकरी–वौकरी देखूँगी। आप सलाह दो दीदी क्या करुँ?"

"मैं? मुझसे क्यों पूछ रही हो?"

"मेरी माँ ने कहा था बेटी कोई भी परे ाानी हो तो प्रियंका दीदी से बात करना और उसकी बात जरुर मानना। प्रियंका दीदी की बात न मान कर अपने जीवन की जो सबसे भारी गलती मेंने की वो तुम मत करना बेटी।''

"क्या? तुम्हारी माँ मुझे जानती है?" मैं हैरान थी । उसने पहले तो कभी जिक्र नहीं किया था ।

"जी, वो आपको जानती भी है और बहुत मानती भी है । उसी ने तो भेजा था जी मुझे आपके पास इलाज के लिये। वरना मैं तो प्राईवेट नर्सिंग होम से ईलाज कराना चाहती थी।''

"यह क्या बोल रही हो।'' मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा था ।

"कौन है तुम्हारी माँ?"

पश्चाताप के आँसू

राजकुमार शर्मा
सीनियर टी.बी. लैब सुपरवाइजर
बी.के. सिविल अस्पताल
12 साल का अनुभव
मन से ठाना है, क्षय रोग को जड़ से मिटाना है
मो. 9250152475

बसन्ती अपने ससुराल में बहुत खु ा थी । पति पत्नी में बहुत प्रेम था। लेकिन आजकल उसकी तबीयत कुछ खराब रहने लगी थी। भारीर टूटता रहता था। कभी सर दर्द तो कभी कमर दर्द और कई बार हल्का–हल्का बुखार भी हो जाता था। खाँसी भी लगी रहती, भूख कम लगती और कमजोरी बढ़ती जा रही थी । उसका पति रामू यदा कदा कैमिस्ट से कुछ गोलियाँ ले आता । यह सिलसिला 3–4 महीने तक चलता रहा ।

फिर एक दिन एक डा0 के पास गए तो उसने कहा टी.बी. लगती है । बस, वो बसन्ती के जीवन की सबसे मनहूस घड़ी थी । देखते ही देखते रामू का बर्ताव उसके प्रति बिल्कुल बदल गया । वह बात–बात पर उससे कुढ़ने व लड़ने लगा । प्यार की जगह नफरत ने ले ली। बसन्ती सारा दिन खाँसती रहती और बुखार में अकेली पड़ी रोती रहती । कोई पूछने वाला नहीं। उस दिन तो रामू ने हद ही कर दी, "तुझे तो पहले से ही बीमारी थी, तेरी माँ ने धोखे से तुझे मेरे पल्ले बाँध दिया ।"

भारीर तो पहले ही तड़प रहा था, बसन्ती की आत्मा भी छलनी हो गई । वह रोती बिलखती अपनी माँ के पास डबुआ कालोनी में आ गई । अगले दिन सुबह माँ बेटी एक जान पहचान वाली टी.बी.एच.वी. प्रियंका से मिले । पूरी बात सुनने के बाद प्रियंका ने कहा, "यह नाजुक समय है । सब कुछ भूलकर अपनी बीमारी पर पूरा ध्यान केन्द्रित करो । रि तों की चिन्ता बाद में करना ।" प्रियंका ने उन्हें फौरन बी.के. अस्पताल मेरे पास भेज दिया । मैंने फौरन उसकी बलगम की जांच व एक्सरे करवा दिये। 3 घन्टे में टी.बी. घोशित हो गई । प्रियंका ने फौरन उसका डॉटस का इलाज भी चालू करवा दिया । बस भगवान मेहरबान हो गया। बीमारी ठीक होने लगी । 2–3 महीने में काफी सुधार गया । "बस दवा पूरे 6 महीने खानी है बसन्ती" प्रियंका ने बार–बार उसे चेतावनी देती रहती है ।

इस दौरान बसन्ती को किसी जान पहचान वाले से खबर मिली कि उसका पति रामू बहुत बीमार है, उसके लक्ष्ण भी कुछ कुछ बसन्ती वाले ही हैं । वह रामू को फौरन फोन करती है । "यहाँ बहुत अच्छा इलाज उपलब्ध है। हमारी जान पहचान भी है । तुम फौरन यहाँ चैकअप कराने आ जाओ ।"

भार्म के मारे रामू नहीं आता। वह अपने किये पर बहुत लज्जित होता है । बसन्ती की माँ भी बार–बार फोन पर समझाती है, " ाादी तो सात जन्मों का बन्धन होता है । छोटी मोटी बातों से थोड़े ही टूटता है ।"

रामू आ जाता है । उसका भी मैंने बीके अस्पताल में हाथों–हाथ चैकअप करवा डाला। उसे भी टी.बी. ही घोशित होती है। बार बार आग्रह करने पर यहीं फरीदाबाद में सास के पास रह कर टी.बी. का इलाज करवाता है । पत्नी और सास के सेवा भाव से भावुक हो उठा। प चाताप के आँसू रामू की आँखों में भर जाते हैं ।

6–7 महीने बाद दोनो स्वस्थ होकर वापिस अपने घर चले जाते हैं । जाने से पहले दोनो सभी स्वास्थ्य कर्मचारियों व डॉटस प्रोग्राम का तहेदिल से भुक्रिया अदा करते हैं कि इन दोनों का पूरा नि ुल्क इलाज हो गया।

आँख मिचौली

दीपमाला
टी.बी.एच.वी.,
बी.के. सिविल अस्पताल, फरीदाबाद
सात साल का गहन तर्जुबा

लेखराज (टी.बी. नं0 762/11) एक स्पूटम पॉजिटिव केस था, यानि उसकी बलगम में कीटाणु निकलते थे व वह दूसरों को संक्रमित कर सकता था । ऐसे मरीज को ठीक करना सबसे जरुरी होता है ।

लेकिन लेखराज का इलाज तो बहुत ही टेढ़ी खीर साबित हो रहा था । पहले तो यह कहकर दवा छोड दी कि मुझे टी.बी. है ही नहीं । मैंने इसकी बलगम की रिपोर्ट में लाल पैन से (+) लिखा दिखाया और बताया कि लाल रंग यानि खतरे का नि ान । फिर इसके एक्सरे के बड़े–बड़े दाग दिखाए । डा0 रमन कक्कड़ ने भी इसे दस मिनट तक लैक्चर दिया तो बड़ी मु कल से दवा फिर से जारी हुई । लेकिन वो भी ऐसे जैसे मुझ पर एहसान कर रहा हो ।

फिर बीच में "ऊपरी चक्कर है" बताकर कई दिन के लिए आगरा चला गया और किसी ओझा से झाड़–फूँक करवा आया 8000 रु0 में । पे ो से ड्राइवर था । तो कई बार जब मैं इसके घर के पास से गुजरती और पूछती तो कहते डयूटी पर कहीं दूर निकल गया है – नतीजा दवा की खुराक का नागा । क्योंकि इसका कमरा मेरे रास्ते में ही पड़ता था तो मैं भी आते जाते इसे टोकती रहती । एकबार इसकी बीवी ने बताया कि तीन दिन से गाड़ी लेकर पंजाब गया हुआ है । लेकिन एक दूसरी मरीज (जो बाजू वाली गली में नुक्कड़ पर रहती है) उसने बताया कि पंजाव वंजाब कोई नहीं, लेखराज घर में ही है । पिछली रात पी के झूम रहा था ।

कई बार यह घर में ही होता और मुझे इसकी पत्नी या पुत्रवधू झूठ कह देती कि कहीं गया है । मुझसे परिवार के लोग काफी कतराते थे । मानो मुझसे कर्जा ले रखा हो । मुझे आते देख इनके घर में भगदड़ मच जाती थी । इसकी दोनों छोटी–2 बेटियाँ तो दूर से ही मुझे आते देख खिलखिलाकर हंसने लगती थी । इन सब अड़चनों को अनदेखा करते हुए मैं इसका दवाई का कोर्स पूरा करने पर ध्यान केन्द्रित रखती थी ।

मुझे बहुत हैरानी होती है कि सरकार मरीजों को मुफ्त दवा भी देती है, जाँच भी करवाती है, हमें तन्ख्वाह भी देती है ताकि इन्हें स्वस्थ कर सकें व इनके बच्चों का बचाव हो जाये । लेकिन कुछ मरीज इतने मूर्ख हैं कि इसकी कद्र ही नहीं करते । नखरे करते हैं । जवाइयों की तरह पे ा आते हैं ।

उस दिन सुबह के दस बजे थे । चौक पार करते समय मैंने दूर से ही देख लिया था

लेखराज गली में चारपाई डाल कर बैठा था । उसके बीवी बच्चे भी वहीं थे । आज सुनहरी मौका था इन सबको समझाने का। बलगम की नियमित जाँच ही नहीं करवाई थी उसने । लेकिन पहले मैं नुक्कड़ वाले मकान में गई जहाँ दूसरी मरीज की दवा पहुँचानी थी । 10 मिनट बाद जब मैं बाहर निकली तो लेखराज का परिवार गली में नहीं दिखा ।

उसके कमरे पे पहुँची तो देखा वहाँ ताला लगा हुआ था । अरे 10 मिनट में सब के सब कहाँ गायब हो गए । उसकी बलगम की जाँच तो बहुत लेट हो रही थी – "थोड़ा इन्तजार करुँ या दोबारा आऊँ" यही सोच रही थी कि बन्द कमरे के अन्दर से मुझे कुछ फुसफुसाहट सुनाई पड़ी । अच्छा ! तो मुझसे पीछा छुड़ाने के मारे सब अन्दर छुप गए हैं और बाहर ताला लगा दिया है ।

मुझे गुस्सा भी आया और हँसी भी । मैंने कुण्डी खड़का दी । अन्दर से आवाजें आनी बन्द हो गईं । मैं चुपचाप खड़ी रही । फिर अन्दर से बच्चों की दबी–2 हँसी सुनाई दी । मैंने फिर कुण्डी खड़का दी – फिर सन्नाटा । इस आँख मिचौली के खेल में मुझे बहुत हँसी आ रही थी । पड़ोसी भी आनन्द ले रहे थे ।

फिर उसे डराने के लिये मैंने ऊँची आवाज में पड़ोसी से कहा (ताकि ये सब अन्दर भी सुन सकें) "लेखराज को कह देना कि कल भी अगर बलगम की जाँच नहीं कराई तो मैं इसकी ि ाकायत पुलिस से कर दूँगी ।"

फिर क्या था, अगले ही दिन लेखराज ने बलगम की जाँच करा ली । लेकिन पिछली गलतियों की सजा तो उसे भुगतनी ही पड़ी । उसकी बीमारी दोबारा बढ़ गई । उसका इलाज दोबारा (टी.बी. नं0 1285/11) चालू हुआ । पुलिस के नाम से वो एकदम सुधर गया है । इस बार लग के इलाज करा रहा है और ठीक है ।

इस आँख मिचौली के खेल में चाहे मैं हारुँ या मरीज हारे, जीतता तो टी.बी. का कीटाणु ही है ।

मुझे बहुत हैरानी होती है कि सरकार मरीजों को मुफ्त दवा भी देती है, जाँच भी करवाती है, हमें तन्ख्वाह भी देती है ताकि इन्हें स्वस्थ कर सकें व इनके बच्चों का बचाव हो जाये । लेकिन कुछ मरीज इतने मूर्ख हैं कि इसकी कद्र ही नहीं करते । नखरे करते हैं ।

दोस्ती की कसम

सुभाष गैहलोत
पहले सीनियर लैब टैक्नीि ायन दयालपुर व मेवात और फिर डाट्स प्लस और एच.आई.वी. सुपरवाइजर के रुप में अनेकों टी.बी. रोगियों की सेवा करते रहे हैं।

माईक्रोस्कोप में बहुत देर तक लग के देखते–2 मेरी आंखे थक चुकी थी। इतने मे बाहर से सबके हसने की आवाज आई। मैने सोचा भोष बलगम की रिपोटे बाद में तैयार करूगां। पहले थोड़ा सुस्ता लू। और मैं अपनी दयालपुर पी0.एच0.सी0. की लैव से बाहर आया। मैने देखा हमारा सफाई कर्मचारी धर्मपाल रोज की तरह न ो में झूमता जा रहा हैं और झाड़ू लगा रहा है। साथ ही साथ रोज की तरह बुरी तरह से खांस भी रहा था। सब कर्मचारी उससे हंसी–मजाक कर रहे थे। **जगबीर मुझसे बोला "अरे सुभाष तू सारे शहर के बलगम चैक करता फिरता हैं। धर्मपाल का भी बलगम अभी चैक कर। कई महीनो से खांसता रहता हैं। ईधर–उधर थूकता रहता है और देखो कितना कमजोर होता जा रहा हैं। पता नहीं कि लंबी खांसी, लंबा बुखार व वजन का कम होना टी0.बी0. के लक्षण है ?"**

मेरा माथा ठनका। बात तो पते की थी । मेरे दिमाग ये पहले क्यों नहीं आई ? बस फिर क्या था। सबने मिलके धर्मपाल को घेर लिया उससे डिब्बी में गाढ़ा–2 बलगम थूकवाया गया और मैने उसी दिन उसकी जांच की। वही हुआ जिसका डर था। न ो की लत उसको ले डूबी थी और उसको टी0.बी0. हो चुकी थी। यानि मैने उसका स्पूटम 2+ पोजेटिव पाया था।

उसका 6 महीने का डाट्स का टी0बी0 का पहली श्रेणी का ईलाज टी0बी0 न0 52/09 के तहत चला। थोड़ा सुधार तो हुआ लेकिन उसने छुप–छुप कर दारू पीना न छोड़ा। नतीजा – टी0बी0 का दुबारा रिलेप्स हो गया। फिर टी0बी0 न0 77/10 के तहत दूसरी श्रेणी का ईलाज शुरू हुआ।

जिस व्यक्ति को नशे की लत हो उसे टी0बी0 लगने का खतरा ज्यादा होता है। और शायद एक बार ठीक हो जाने पर भी दोबारा बीमारी बनने का खतरा भी ज्यादा होता है।

अबकी बार हम सब दोस्तो ने उसको कसम दिलाई कि अब न ाा नहीं करेगा। हमे उम्मीद नहीं थी। लेकिन उसने अपना वायदा पूरा निभाया। पूरा ईलाज किया तथा बिल्कुल ठीक हो गया। बाद मे मेरी बदली फरीदाबाद हो गई।

अभी हॉल ही में मेरा दयालपुर जाना हुआ तो मैं दंग रह गया। पता लगा कि धर्मपाल ने टी0.बी0. के सभी मरीजों की पूरी जिम्मेवारी खुद सम्भाल रखी हैं। वह रोजाना टी0.बी0. के सब मरीजों को बाहर खुले में बैठा कर पाठ पढ़ाता है। मुझे वि वास नहीं हुआ जब उसको मरीजों से कहते सुना कि भैया जीवन मे न ाा कभी मत करना – बीड़ी, सिगरेट, शराब, चरस, गांजा, तम्बाकू इत्यादी आज ही छोड़ दो।

छोटी–सी भूल

सत्यबीर सिंह नर्वत
एस.टी.एस., बी.के.
सिविल अस्पताल फरीदाबाद

"डाक्टर साहब, मैं ठीक तो हो जाऊंगी ?", "हाँ चमेली बस तुम ये दवाई के पत्ते मत छोड़ना, भार्तिया ठीक हो जाअगी" । हर बार वह यही सवाल करती और मेरा जवाब भी वही होता । लेकिन अन्दर ही अन्दर मैं चमेली को लेकर चिंतित था। सही ढंग से पहली श्रेणी के डॉटस की दवाईयाँ खाने के बावजूद चार महीने बाद भी उसकी बलगम की जाँच की रिपोर्ट पॉजिटिव आ रही थी । कीटाणु साफ होने का नाम ही नहीं ले रहे थे ।

चमेली का पति होडल बस स्टैण्ड पर एक पुरानी फटी हुई छतरी के नीचे बैठकर सारा दिन जूते गाँठता रहता था । छतरी के छेदों में से धूप झांकती रहती । उसे देखते ही उसकी गरीबी का अहसास हो जाता था । उनका कोई बच्चा नहीं था ।

चमेली की बलगम में कीटाणु आते जा रहे थे, यानि उसका प्रथम श्रेणी का इलाज फेल हो रहा था । हमने डॉक्टर साहब से सलाह म ावरा करके उसे पहली श्रेणी का बदल कर फिर ऊपरी श्रेणी का इलाज देना चालू कर दिया जिसमें 24 इंजेक ान भी लगे । थोड़ा ठीक हो गई लेकिन तीन चार महीने सही इलाज के बावजूद उसकी बलगम की रिपोर्ट में कोई सुधार नहीं आया । मैंने उन्हें महरौली टी.बी. अस्पताल, दिल्ली के लिए रेफर किया । लेकिन गरीबी व अज्ञानता के चलते वे इतनी दूर जाने में असमर्थ थे । न गए।

दूसरी श्रेणी का आठ महीने का इलाज भी पूरा होने को आ गया था। परन्तु उसकी बलगम की रिपोर्ट तो बद से बदतर हो गई । एक दिन चमेली बहुत खु । नजर आ रही थी बोली, "डॉ0 साहब, मेरे चेहरे पर सुर्खी आ गई है। पड़ोसी कह रहे थे कि तेरे चेहरे की चमक बता रही है कि अब तू ठीक हो रही है " । मैंने हंस कर उसको टाल दिया । लेकिन मेरा मन अन्दर ही अन्दर डूब रहा था कि मानो कोई अनहोनी होने वाली है । कुछ दिनों बाद चमेली का देहान्त हो गया ।

मैं उसके क्रिया करम पर गया । बहुत से गाँव वाले वहाँ नीचे बैठे थे । मैं भी चुपचाप उसके पति के पास बैठ गया । वह सबको चमेली की रामकथा सुना रहा था। बातों बातों में सबको कह रहा था कि पिछले 4 साल से चमेली को टी.बी. की बीमारी थी और भारु में उसने कई प्राइवेट डाक्टरों इलाज करवाया और बहुत पैसा बहाया । मैं चौंक गया । पिछले डेढ साल के इलाज के दौरान न चमेली ने न उसके पति ने मुझसे पुराने इलाज का कोई जिक्र किया था । कभी बताया ही नहीं कि पहले भी दवाऐं खाई थी । मुझसे नहीं रहा गया । मैंने उसी वक्त भाोक सभा में ही उससे पूछा," चमेली के पुराने इलाज की बात आपने मुझसे क्यों छुपाई ?"। वह फूट–फूट कर रोने लगा । "हम डरते थे कि कहीं आप सरकारी मुफ्त इलाज देना बन्द न कर दें । मैं इस छोटी सी भूल के लिए आपसे और खुदा से माफी माँगता हूँ ।"

छोटी सी भूल?

मैं तो चमेली को एक नया, ताज़ा, पहली बार टी.बी. होने वाली मरीज ही मान कर चला था । इसलिए भारु में उसे पहली श्रेणी का इलाज दिया था, जोकि गल्त था । जिस टी.बी. के मरीज ने पहले से टी.बी. की दवाओं का सेवन कर रखा हो, उसपर दवाओं का असर कुछ कम होता है । इसलिए ऐसे मरीज को कमजोर श्रेणी (Category 1) नहीं दी जाती । बल्कि भाक्ति ाली दूसरी श्रेणी का इलाज दिया जाता है । भारु से ही चमेली को दूसरी श्रेणी का इलाज देना चाहिये था । कहीं मेरी यही चूक उसके लिये जानलेवा तो नही सिद्ध हुई ? लेकिन ऐसी गल्ती मैं कर कैसे गया ? इतने सालों के तजुर्बे से मैं तो मरीज से बातों बातों में सच उगवाने में माहिर हो चुका हूँ । मैं हर मरीज से कई बार पूछता हूँ कि, "क्या आपने पहले कभी टी.बी. का इलाज करवाया है ?" गलत श्रेणी का इलाज करना तो एक मूलभूत भूल है – एक पाप है। टी0बी0 के इलाज में छोटी से छोटी बात छिपाना भी जानलेवा हो सकता है।

मिट्टी का तेल

फज्जू खान
लैब टैक्नि ियन,
औरन्गाबाद,पलवल

"प्लीज डा0. साहब।"

मैं झुंझला उठा और सोचा यह तो जोंक की तरह पीछे ही पड़ गया है। मान ही नहीं रहा है । खामाखां मेरा काम बढ़ा रहा है । एक बार फिर मैने उसे समझाया ''अभी पिछले हफ्ते ही तो बलगम की जांच करी थी। कीटाणु ही कीटाणु भरे पड़े थे। तुम्हारी स्लाईड में । रिपोर्ट 3+ थी। टी0. बी0. बहुत धीरे –2 ठीक होती है। इतनी जल्दी कोई फर्क नहीं पड़ा होगा। अब दो महीने बाद बलगम की जांच करेगें तुम्हारी ''।

लेकिन वो तो जैसे सुन ही नहीं रहा था। उस पे तो मानों धुन सवार थी। '' प्लीज डाक्टर साहब आज जांच कर दो फिर कभी जिन्दगी में नहीं कहूंगा ''। और उसने बलगम से भरी डिब्बी मेरे सामने रख दी।

मैं समझ गया कि यह आज नहीं मानेगा। यह जांच तो मुझे करनी ही पडेगी। गले पड़ा ढोल तो बजाना ही पड़ेगा।

सो मैने डिब्बी उठाई और काम भुरू कर दिया। लैब रजिस्टर में ऐन्ट्री की मौहम्मद भौकत, गांव नई, तहसील पुन्हाना, जिला मेवात टी0.बी0. न0.–416/04। बीच में मैने उससे पूछा '' अच्छा बाबा तुम जीते और मैं हारा । यह तो बताओ क्यों जांच करवाना चाहते हो इतनी जल्दी''।

''बस कुछ मत पूछो। आप भी हैरान रह जाओंगे। आज मेरी बलगम में एक भी टी0.बी0. का कीटाणु नहीं मिलेगा।

''अरे ऐसी कौन सी जादू की छड़ी है तुम्हारें पास ? दवाईयों से तो भैया टाईम लगता हैं कीटाणु साफ होने में ।''डाक्टर साहब, मैने एक खास चीज इस्तेमाल की हैं। दवाई के साथ–2 उस से टी0.बी0. के कीटाणु फौरन मर जाते है।" सुनकर मेरी उत्सुकता बढती गई। ऐसी कौन सी जड़ी–बूटी है या दवाई है जिसके तीन–चार दिन लेने से बलगम के कीटाणु सारे साफ हो जाये। अगर आज इसका बलगम वाकई मे साफ आता हैं तो मेरी जीवन की एक अनहोनी घटना होगी।

सोचते –2 मैने उसकी सलाईड माईक्रोस्कोप मे फिट करी और उसे चैक करना भुरू किया।

वे मेरी तरफ टकटकी लगाकर बड़ी उम्मीद के साथ देख रहा था। लैब मे एक अजीब सा स्पैन्स फैला हुआ था।

मैने देखा टी0.बी0. के लाल–2 कीटाणु उसकी सलाईड मे बिखरे पड़े थें रत्ती भर भी बदलाव नही था। वहीं 3+ रिपोर्ट । ढाक के तीन पात । माईक्रोस्कोप को बाजू में करके चुपचाप उसकी तरफ देखा।

''साफ है ना मेरा बलगम'' उसने बच्चे की तरह उत्सुकतावश पूछा।

''पहले यह बताओ तुमने खाया क्या था । जब तुम्हारी रिपोर्ट बताऊंगा"।

''रोजाना रात को एक गिलास पीता हूँ..... मिट्टी का तेल''

जैसा उसने वायदा किया था वैसे ही किया। फिर कभी दोबारा उसने मुझे बलगम की जाँच के लिये नहीं कहां।

दो–एक महीने में वह दुनिया जो छोड़ गया था।

ताजी हवा

विजय पाल
टी.बी.एच.वी., सरकारी अस्पताल एम्स बल्लभगढ़ ।
हर साल करीब 600 टी.बी. रोगियों को ठीक करने की जिम्मेवारी उठाते हैं। सब मरीजों से मोबाइल के जरिये जुड़े रहते हैं। दिन रात उनकी सेवा में तत्पर रहते हैं। उनके घरों में जाकर टी. बी. की जानकारी फैलाते हैं। इन्हें टी.बी. उन्मूलन का जनून है।
मोबाइलः 9953482599

कमरे के भीतर का नजारा देखकर मैं स्तब्ध हो गया । दरवाजे पर ही ठिठक कर रुक गया । मेरे कदम आगे नहीं बढ़ रहे थे । मानो फेविकोल से मेरे जूते फ र्ा से चिपक गये हों । मैं जिस टी.बी. के मरीज के घर की तस्कीद करने पहुँचा था, उसका नाम था – नर्बदा । 85 साल की एक बूढ़ी अम्मा जिसकी बलगम की रिपोर्ट में 3 प्लस कीटाणु भरे पड़े थे । छोटा सा घुटन भरा कमरा था । एक साइड पर चारपाई पे अम्मा बैठी जोर–2 से खाँस रही थी । अम्मा बहुत बूढ़ी, कमजोर व बीमार लग रही थी । उसकी गोदी में एक नन्हा मुन्ना बच्चा था जिसे वह प्यार कर रही थी व सुलाने की कोि ा ा कर रही थी । पास में एक खुली परात रखी थी जिसमें उसका बलगम कम और खून ज्यादा नजर आ रहा था । ये बुढ़िया तो भाायद ही बचेगी, मैंने सोचा। कमरे के दूसरे कोने में गैस पर एक औरत खाना बना रही थी। खिड़की बन्द थी। रो ानदान तो था ही नहीं। दूसरा दरवाजा भी बन्द पड़ा था। पँखा बंद था।

सबसे पहले मैंने अम्मा से उस ि ा ु को लिया और बाहर हवा में ले आया । उसकी माँ भी पीछे–पीछे भागी आई। बच्चा मैंने उसके हवाले किया और रौब से वहीं बाहर रुकने को कहा ।

फिर मैंने उसके बेटे से सख्ती से कहा, "उठाओ चारपाई" । एक तरफ से मैंने तथा दूसरी तरफ से उसने अम्मा को चारपाई समेत उठाकर बाहर खुले आँगन में दूर ले आये । अम्मा चिल्लाती रही, "अरे, नपूतो कहाँ ले जा रहे हो मुझे? अभी तो मेरी सांसे बाकी है।''

फिर वापिस कमरे में जाकर मैंने खिड़की खोल दी । दरवाजा जो पिछली गली में खुलता था, उसके दोनों पल्ले भी पूरी तरह खोल दिये । सारे घर वाले न नुकर करते रहे । मैंने किसी की एक न चलने दी । फिर मैंने पंखा फुल स्पीड पर चला दिया । ताकि बीमारी वाली व गन्दे कीटाणुओं वाली हवा बाहर भाग जाए तथा ताजी साफ हवा कमरे में प्रवे ा कर जाये। फिर मैं कुर्सी खींच कर बाहर अम्मा के पास बैठ गया । परिवार के बाकी सब लोग भी बाहर आ गये ।

"अम्मा, तुझे टी.बी. है । फैलने वाली टी.बी । खांसी करते समय मुँह पर रुमाल रखो "अम्मा ने फौरन मुँह पर चुन्नी लपेट ली ।

"उस परात में नहीं थूको । किसी ढक्कन वाली डिब्बी में थूको व उसे हमे ॥ बन्द करके रखो । "

"जी बहुत अच्छा" अम्मा ने कहा ।

"अपनी पोती से प्यार करती हो?"

" डा0 साहब, वो तो मेरी जान है । "

"तो फिर 2 महीने उससे दूर रहना है । उसे गोदी में उठाना, चूमना या साथ सुलाना उचित नहीं है । वरना तुम उसे भी बीमार कर दोगी ।"

"हे भगवान । उस पर अपना साया भी नहीं पड़ने दूँगी अब"

"अब दो महीने तक तुम यहीं बाहर खुले आँगन में रहोगी, अन्दर कमरे में नहीं । ठीक है?"

"मैं तो वैसे भी ऊपर जाने को तैयार बैठी हूँ ", अम्मा हँस कर बोली ।

बात में सच्चाई तो थी । सो मैंने कहा, " अम्मा सोच लो । जब भी ऊपर जाना है, तब भी जाना है । तो क्यों न दवाई खा के जाऐं? "

अगले हफ्ते मैं फिर गया तो देखा अम्मा वहीं बाहर अकेली लेटी हुई थी । हालत अब भी वैसी ही पतली थी । खाँसी से बुरा हाल था, बुखार भी बहुत था । उसके बेटे ने मेरे कान में धीरे से पूछा, "डा0 साहब, कितना समय बचा है मेरी माँ के पास?"

मैंने ऊँची आवाज में कहा, "अम्मा जो कुछ भी हो रहा है, होने दो । चाहे कुछ भी हो जाए, डाटस का पत्ता नहीं छोड़ना ।" अम्मा कमजोर आवाज में बोली, " चाट का पत्ता नहीं छोडूंगी, चाहे कुछ भी हो जाये ।"

करीब दो महीने बाद बल्लभगढ़ के सरकारी अस्पताल में मेरे डॉटस सेन्टर पर काफी भीड़ थी । मैं काम में बहुत व्यस्त था ।

मैंने अपने सामने बिखरे कागजों पर से नजर उठाई और बाहर की ओर देखा । देख कर दंग रह गया, जमीन आसमान का फर्क पड़ गया था । अम्मा अपने आप अकेली सोटी लेकर चल कर आ रही थी । वह बहुत स्वस्थ लग रही थीं।

मुझे देखकर मन्द मन्द मुस्कुरा दी, "पोती को गोदी ले सकूँ अब?" उसने पूछा ।

इकलौती औलाद

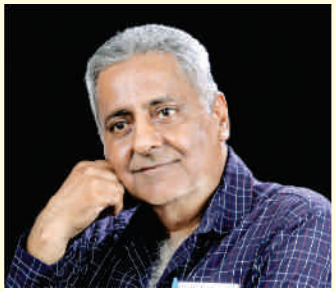

डा0 रमन कक्कड़
सम्पादक (टी.बी. स्पे ि लस्ट)
बी.के. अस्पताल, फरीदाबाद
लेखक : एक मौत प्रति मिनट (3 भाशाओं में), द टैस्ट ऑफ टाइम (इंग्लि ा)
निर्माता : "तीन बाते" टी.बी. पर फिल्म, अनेको रेडियो प्रोग्राम

टर्न – टर्न ..... मैने अपना मोबाईल उठाया '' हैलो '' ।

''डाक्टर साहब, आप यह पूजा का कुछ करते क्यों नही ? '' ि ाकायत भरे लहजे में एक महिला बोली ।

''कौन पूजा? आप कौन बोल रही है ?'' मैं कुछ समझ नही पा रहा था । सुबह के 10 बजे थे । बी0. के0. अस्पताल में टी0. बी0. के मरीजो कि लम्बी कतार लगी पड़ी थी । सोमवार को तो यह भीड़ चरम सीमा पर होती है । दिमाग वैसे ही धूमा पड़ा था ।

''जी मै कृष्णा ए0.एन0.एम0. । उस दिन आई नहीं थी पूजा के साथ मै?''

''कृष्णा जी, क्या परे ाानी है पूजा की ।'' पूजा नामक मरीज का मुझे अब भी कोई ध्यान नहीं आया ।

''अब क्या बताऊँ डा0. साहब – सुबह से उसके मम्मी –पापा आये बैठे हैं मेरे पास और बस रोते ही चले जा रहे है ।'' बड़ी भारी आवाज मे कृष्णा जी ने कहा ''एक ही रट लगा रखी है दोनो ने कि पूजा भी अब नहीं बचेगी''

''पूजा भी यानी ?'' मै बिल्कुल कन्फयूज था कि पूजा कौन सी मरीज है । और '' भी '' का क्या अर्थ है ।

''इन्ही के परिवार मे एक और जवान लड़की अभी हाल ही मे टी0.बी0. से जान गवा चुकी है ।''

''कौन लड़की? क्या उसने डाट्स लिया था?''

''जी हॉ उसका नाम भी पूजा ही था । पूजा पुत्री प्रेम, टी0.बी0. न0. 1561/09, और 620/10, जिसकी 20.8.10 को मृत्यु हुई । वो इस पूजा की चचेरी बहन थी । मैने ही उसे दोनो बार डाट्स के पत्ते खिलाये थे । वो भी इस पूजा की तरह मां–बाप की इकलौती औलाद थी । न कोई भाई, न कोई बहन । उसके माँ बाप अब सारा दिन मारे–2 धूमते रहते है गली मे । दोनो बाँवरे हुए फिरते है । उनका तो जीवन ही खाली हो चुका है ।''

'' तो अब क्या दिक्कत है इस पूजा को?'' मैने अपनी दु:ख भरी भावनाओं को उमड़ते देख उन्हे फौरन बाजू मे धकेलते हुए मुद्दे पर आने की कोि ा ा की ।

''बस उसके मां–बाप रोते जा रहे है । ''

''तो मैडम आप ने क्या किया ?'' मैने पूछा ।

''सच बताऊँ डाक्टर साहब? बस मै भी रोती जा रही हूँ।'' कृष्णा जी ने कहा।

एक अजीब सा सन्नाटा छा गया।

सुनकर मैं सकते मे आ गया। मेरी बोलती बन्द हो गई। मेरा मन भारी हो चुका था। खैर,

मैने नि चय किया कि जो भी बन सके करूंगा। इस पूजा को ठीक करना मेरे लिए एक चुनौती बन चुकी थी। मैने कहा ''बस मैडम पूजा और उसके मम्मी पापा को लेकर अभी के अभी मेरे पास बीके अस्पताल आ जाइयें। मै इन्तजार कर रहा हूं।''

उस दिन पूजा की मैंने अच्छी तरह जांच करी। उसका रिकार्ड देखा। पूजा पुत्री देवीन्द्र, टी0.बी0. न0.– 373/09 और अब ओ0.पी0.डी0. न0.– 1188। अब दूसरी बार इलाज चल रहा था – दूसरी श्रेणी का।

वाकई में इलाज के बावजूद उसके एक्सरे का दाग ज्यादा विकृत हो चुका था, बलगम के कीटाणु साफ होने का नाम ही नही ले रहे थे। वैसे भी उसके लक्षण जैसे खांसी, बुखार व कमजोरी इत्यादि जस के तस बने पडे थे। बस कुल मिलाके पूजा में रत्ती भर भी सुधार नही आया था। ये सभी बाते इलाज की असफलता की ओर इ ाारा कर रहीं थी।

मैने महसूस किया कि पहले ही बहुत देर हो चुकी है। क्योकि पहले ही उनका दिल टूटा पड़ा था। और उस पूरे परिवार का हमारे इलाज पर से वि वास उखड चुका था। इन हालात में मैनें उसे फौरन मैहरोली टी0.बी0. अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। पूजा व उसके पूरे परिवार की बीमारी का इतिहास तथा रिपोर्टो का निचौड़ साफ–साफ संक्षेप मे लिख कर तैयार किया और उन्हे थमा दिया ताकि आगे बड़े अस्पताल के डाक्टरो को सही निश्कर्ष निकालने में सहूलियत रहे । मैने तीनो को बैठा कर अच्छी तरह देर तक समझाया बुझाया कि इस हालात में भर्ती रहना ही उपयुक्त रहेगा।

कई दिन बाद मुझे पता चला कि वो लोग पूजा को मैडिकल कालेज रोहतक ले गयें है। मैहरोली इस लियें नही गये क्योकि दूसरी पूजा का आखरी दिनों का इलाज वही हुआ था।

फिर बहुत दिनों बाद मैने कृष्णा जी को फोन मिलाया, ''पूजा कैसी है मैडम?''

''वो तो चल बसी'।

टी0.बी0. का डाक्टर बनने के बाद अनेको मौते देख चुका हूं। धीरे–धीरे भावनाऐं जैसे मर चुकी है। दिल पत्थर का हो चुका है। सुख और दुख दोनो ही जैसे मन को छू नही पाते। लेकिन उस रात तकियें मे मेरे आसूं भी रूक नही रहे थे।

मेरी भी इकलौती बेटी जो है।

पूरा इलाज

रविन्दर
स्टाफ
आर0 एन0 टी0 सी0 पी0
9818125502

"दो महीने के इलाज से मेरी पुरानी खाँसी बिल्कुल ठीक हो गई है । पहले बुखार रहता था—अब वो भी सही है ।"

"बहुत बढ़िया, बबलू....." मैंने कहा।

"पहले मैं कितना कमजोर हो गया था । इन दो महीनों में 3—4 किलो वजन बढ़ गया । खूब भूख लगती है जी ।"

"हाँ बबलू, एक या दो महीने के सही इलाज से ही टी.बी. के ऊपरी लक्ष्ण बिल्कुल ठीक हो जाते है ।"

"तो डा0 साहब, जब मुझे कुछ है ही नही अब, तो मैं दवा क्यों खाऊँ।'' बबलू बहुत ढीठ बन रहा था।

"टी.बी. का इलाज लम्बा होता है – 6 से 8 महीने । टी.बी. की जड़ गहरी होती है। अगर इलाज बीच में छोड़ दें तो बीमारी दोबारा उभर आती है,'' मैंने समझाया।

अजरोंदा गाँव के बीचों बीच एक मेन चौक है जहाँ मेरे भाई साहब की दुकान है। बबलू वहीं पड़ोस में रहता था। इसलिये मैंने 2 महीने पहले इसका पहली श्रेणी का डाट्स का डिब्बा अपनी दुकान पर रखवा दिया था । आते जाते भाई साहब उसे बुलाकर वहीं दवा खिला देते थे ।

लाख समझाने बुझाने पर भी बबलू ने दवा बन्द कर दी । इतना ही नहीं, मुझसे और भाई साहब से नजर चुराने लगा । उसने जान बूझकर आने जाने का रास्ता ही बदल दिया ।

करीब 6 महीने बाद बबलू दुबारा बीके अस्पताल में मेरे कम्प्युटर रूम में आया। मुझे बहुत अजीब लगा जब सारे स्टॉफ के सामने बबलू ने मेरे पैर पकड़ लिये और माफी माँगने लगा । वो रो रहा था – काफी कमजोर व बीमार लग रहा था । उसकी माँ व छोटा भाई.....भी साथ खड़े थे । अब की बार दोनों भाइयों की बलगम में टी.बी. के कीटाणु पाए गए थे।

बबलू का दूसरी श्रेणी का इलाज तथा उसके भाई का पहली श्रेणी का इलाज मेरे भाई साहब की दुकान से दुबारा चलवा दिया। इस बार कोई गलती नहीं हुई। दोनों भाई बिल्कुल ठीक हो गए।

वो दिन था और आज का दिन है, बबलू को मैं कहीं भी नजर आ जाऊँ वो मेरे पाँव छुए बिना नहीं मानता ।

घर से बेघर

दिनेश कुमार
टी.बी.एच.वी., ई.एस.आई.,
डिस्पेन्सरी नं0 4, एन.आई.टी.

बस, टी.बी. की दवा रुकनी नहीं चाहिये । पूरी चले 6 से 8 महीने

दुर्भायव ा, भारत के कुछ राज्य व जिले बहुत गरीब व पिछड़े हुए हैं । वहाँ के नागरिक दाने–दाने को मोहताज हैं । नौकरी व काम धन्धा करने के मौके बिल्कुल नदारद हैं । इसलिये बहुत से श्रमिक जीवन यापन के लिये दूर–दराज के बड़े–बड़े भाहरों की ओर कूच कर देते हैं – जैसे हमारी उद्योग नगरी फरीदाबाद । यहाँ पहुँच कर उनको बहुत दुगर्ती व अमानवीय व्यवहार झेलना पड़ता है । वे लोग किसी स्लम बस्ती में छोटे से किराए के एक कमरे में 5–7 जन मिलकर रहने लगते हैं ।

न पीने का साफ पानी, न ताजी हवा, न ताजा खाना नसीब होता है । दिन–रात ओवरटाईम करके बस अपने परिवार के लिये दो पैसे जोड़ने का लक्ष्य ठान कर जुटे रहते हैं । ऐसे वातावरण में शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति क्षीण हो जाती है और टी.बी. जैसी बीमारी लगने का खतरा बढ़ जाता है । फरीदाबाद में ऐसे अप्रवासी श्रमिक टी.बी. के मरीजों की कमी नहीं है । उन्हें स्वस्थ करना एक बहुत बड़ी चुनौती है, क्योंकि न जाने कब वापिस गाँव चले जाऐं ।

संजय कालोनी की सोनम (टी.बी. नं0 41/12) के पेट में जब टी.बी. की गाँठें बन गई तो मैंने अपनी ई.एस.आई. डिस्पेन्सरी एन.एच.–1, से उसका डाट्स का इलाज भुरु किया । थोड़ा ठीक होने पर उसके घर वाले ने उसे वापिस मायके भेज दिया और इलाज छूट गया ।

सुरजीत (टी.बी. नं0 160/12) ने एक प्राइवेट डाक्टर के बहकावे में आकर हमारी डाट्स की दवाऐं लेना छोड़ दिया "सरकारी से प्राइवेट दवाऐं बेहतर हैं" कहने लगा ।

इसी तरह जगदी ा (टी.बी. नं0 27/11) भी दवा बीच में छोड़कर अपने गाँव चला गया ।

राजे वर (टी.बी. नं0 230/11) बहुत सीरियस हालत में पड़ा है । उसकी बीवी जैसे तैसे नौकरी करके उसे व अपने बच्चों को पाल रही है । कई बार तो उसे रोटी भी नसीब नहीं होती । टी.बी. बीमारी से कैसे निजात पाएगा बेचारा क्योंकि इसमें तो सही खुराक का भी बहुत महत्व होता है ।

विनोद कुमार (टी.बी. नं0 65/11) भी किसी प्राइवेट डाक्टर के बहकावे में आ गया । कहने लगा, "मुझे तो साँस की बीमारी है, न कि टी.बी." । और डाट्स का इलाज छोड़ बैठा । एक आध महीने में ही वह चल बसा ।

मुजेसर में किराए पे रहने वाले महिन्दर (टी.बी. नं0 450/11) ने भी डाट्स बीच में छोड़ दी । उसे झज्जर में नौकरी जो मिल गई ।

संजय कालोनी में गन्दे नाले पर एक छोटे से कमरे में जो 10–12 लोग रहते हैं, उनमें केला नामक टी.बी. रोगी (टी.बी. नं0 735/11) भी बीमारी से कम और गरीबी से ज्यादा पीड़ित लगती है ।

खानाबदो ा मरीजों (यानी फ्लोटिंग पापुले ान) का बीच में दवा छोड़ कर गायब हो जाना हमारे टी0बी प्रोग्राम के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

तीन टेढ़ी–मेढ़ी रोटियाँ

डा0 रमन कक्कड़
सम्पादक (टी.बी. स्पे ि लस्ट)
बी.के. अस्पताल, फरीदाबाद
लेखक : एक मौत प्रति मिनट (3 भाशाओं में), द टैस्ट ऑफ टाइम (इंग्लि ा)
निर्माता : "तीन बाते" टी.बी. पर फिल्म, अनेको रेडियो प्रोग्राम

''डॉक्टर साहब कोई अच्छा सा टानिक ला दो मुझे'' रेखा ने मुझसे विनती की।

रेखा टीबी की एक पुरानी मरीज थी। जो फरीदाबाद के सैक्टर–19 की ईएसआई डिस्पेंसरी से दो बार डाट्स का पूर्ण कोर्स कर चुकी थी। लेकिन उसकी बीमारी थोडा दबने के बाद फिर उभर आती। समय–समय पर दिल्ली के बडे अस्पतालों में भी दिखा चुकी थी। अब वो मेरे पास सांई घाम में आई थी उसकी हालत कुछ ज्यादा ही खराब थी। कमजोर थी, चलने में असमर्थ। दो कदम चलने पर सांस फूल जाती थी। उसका पति व दोनों छोटे–2 बच्चे भी मेरे सामने बैंच पर बैठे थे। बेटी का नाम प्रिया था जो 6–7 साल की रही होगी और 4 साल का बेटा । ''टानिक की नहीं, तुम्हें टीबी के उत्तम इलाज की जरूरत है'' मैंने उसे समझाया।

"डॉक्टर साहब, मुझे मालूम है कि मेरे फेफडे गले पडे हैं। अब वो कभी भी सही नहीं होंगे। इलाज तो खूब करवा लिया पिछले 5–6 साल में। सब बेकार, आप तो मुझे एक बढिया टॉनिक दे दो जिससे मैं एक साल और जी जाऊँ। चाहे खटिया में ही पडी रहूँ। चाहे जितना भी बुखार रहे या खांसी । चाहे एक कदम भी न चल पाऊ। बस मेरी गाडी एक साल और चल जाये किसी तरह।"

"एक साल ही क्यों," मैंने पूछा।

''बस मैंने नि चय कर लिया है कि एक साल के अंदर–2 मैं अपनी प्रिया बिटियां को चूल्हा चौका करना सिखा दूंगी। ताकि वो इतनी काबिल हो जाए कि किसी तरह स्टोव जलाकर 3 टेडी–मेढी रोटियाँ सेक ले।''

"तीन रोटियाँ !" मैं कुछ समझा नहीं।

"एक अपने भैया के लिए, एक पापा के लिए और एक अपने लिये।"

हे भगवान ! प्रिया तो एक नन्ही सी गुड़िया है।

''बस उसके बाद मैं फारिग हूँ – भगवान के पास जाने के लिए। किसी से कोई ि ाकायत नहीं होगी मुझे।"

कुछ दिन के बाद जब रेखा अपनी दवा के लिए नहीं पहुँची, तो मैंने अपने नियम के मुताबिक उनके मोबाईल पर फोन मिलाया। फोन की आवाज कट रही थी।

उसके पति ने कहा "डाक्टर साहब, मैं दिल्ली में हूँ। रेखा 3 दिन से ऑल इंडिया अस्पताल में भर्ती है। कुछ टैस्ट हो रहे हैं, छुट्टी मिलते ही आपके पास ले आऊंगा रेखा को।"

फिर कई दिन जब वो नहीं आए तो मैंने फिर फोन किया ।

''हैलो'' उसका पति बोला ''डॉ0 साहब, हम अपने गांव आ गए थे। कल ही रेखा को उसके हवाले किया है।'' आवाज साफ नहीं आ रही थी।

''किसके हवाले?''

''अग्नि के।''

वहमी पति

सुभाष गैहलोत
पहले सीनियर लैब टैक्नीि ियन दयालपुर व मेवात और फिर डाट्स प्लस और एच.आई.वी. सुपरवाइजर के रुप में अनेकों टी.बी. रोगियों की सेवा करते रहे हैं।

ऊषा की उम्र यही कोई 20 की होगी । पर उसकी हालत बहुत नाजुक थी। महीनों से बुखार आ रहा था । खाँसी भी काफी थी । वह बहुत दुबली–पतली थी । चलना फिरना या अपने बच्चे को उठाना भी उसके लिए दूभर था । उसकी बेटी अपनी नानी की गोद में जोर–जोर से रो रही थी। मैंने हिसाब लगाया लंबा बुखार, लंबी खाँसी और वजन का इतना ज्यादा कम हो जाना तो टी.बी. ही दर्शाता है ।

"ऊशा, तुम बिल्कुल सही जगह पर आई हो । " मैंने उसकी बलगम की डिब्बी ले ली और उन तीनों को बाहर खुले में पेड़ के नीचे बैठने को कहा । उसकी बलगम की जाँच में तो वही नामुराद टी.बी. के कीटाणु फैले पड़े थे । यानि स्पूटम रिर्पोट 3 पॉजिटिव थी।

बाहर जाकर मैंने उसे समझाया, "पहली बात तो यह है कि ज्यादा से ज्यादा समय बाहर खुले में ताजी हवा में रहना है। खाँसी करते वक्त मुँह पर चुन्नी या कपड़ा रखना । तुम्हारी छोटी बच्ची तो दो महीने तुम्हारी माँ के साथ ही सोयेगी ।"

ऊशा ने कहा, "ठीक है, डॉ साहब । पर मैं बच तो जाऊँगी ?"

"हाँ, बिल्कुल ठीक हो जाओगी । इस बीमरी में इलाज जरा लंबा चलता है । इसमें कोई नागा या गड़बड़ी नहीं होनी चाहिए।'' मैंने कुछ सोचकर कहा, "डॉटस का इलाज तो पूरे दे ा के हर जिले में उपलब्ध है । चाहो तो फौरन अपनी ससुराल वापस चली जाओ । वहाँ भी यही दवाई मिल जायेगी ।" "दवाई तो बहुत दूर की बात है, मेरा पति तो मुझे कहीं दिखाने भी नहीं ले गया । इतना वहमी है कि कहता है ये भूत–प्रेत का चक्कर है जो तू मायके से लेकर आई है । कहीं हम पर भी इसका साया न पड़ जाये । इसलिए वापस मायके चली जाओ । जब ये ठीक हो जाये तो मुझे बता देना मैं लेने आ जाऊँगा।'' कहते कहते ऊशा और उसकी माँ रोने लगे ।

ऊशा का प्रथम श्रेणी का इलाज 6 महीने चला और वह ठीक हो गई । उसने अपने पति को कई बार खबर भेजी लेकिन वो उसे लेने नहीं आया । अपने पति की तरफ से ऊशा को बहुत निरा ाा हाथ लगी । उसका भ्रम टूट गया । उसने खाना पीना छोड़ दिया मानो उसमें जीने की इच्छा ही मर गई हो । नतीजा टी.बी का दोबारा रिलेप्स हो गया । द्वितीय श्रेणी का इलाज दोबारा भाुरु हो गया (टी.बी. नं0 955/10) और फिर ऊशा स्वस्थ होती चली गई । एक दिन उसने मुझसे कहा, "मेरा पति आये या न आये अब मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता । मैं अपनी बेटी और माँ–बाप के साथ यहीं ठीक हूँ । और मैंने एक कम्पनी में नौकरी भी कर ली है । "

मुझे यह सुनकर बहुत खु ाी हुई। कुछ महीनों बाद बल्लभगढ़ के सिविल अस्पताल में मुझे ऊशा दिखाई दी। वह बहुत स्वस्थ लग रही थी और उसकी बच्ची भी काफी खु ा लग रही थी । अचानक उसकी बेटी ने "पापा–पापा" चिल्लाना भाुरु कर दिया और भाग कर गई और अपने पापा की गोद में जाकर बैठ गई ।

"अच्छा तो आखिरकार तुम्हारा वहमी पति आ ही पहुँचा।'' मैंने चुटकी ली।

''नहीं नहीं डाक्टर साहब, आप गलत समझ रहे हो । मैंने दूसरी भाादी कर ली है । यह मेरे दूसरे पति हैं। मैंने इन्हें साफ–साफ अपनी टी.बी. की बीमारी और डबल इलाज के बारे में बता दिया था । फिर भी

दवा के दस डिब्बे

रेखा रानी
टी0.बी0. हेल्थ विजिटर,
डाट्स सेन्टर, जच्चा–बच्चा अस्पताल,
सैक्टर–30, फरीदाबाद

14 साल की प्यारी सी एक लड़की मेरे पास आई और बोली ''दीदी ये लो मेरा कार्ड''। कार्ड पड़कर मुझे झटका लगा। उसे टी0 बी0 थी। बड़े भारी मन से मैने डॉट्स का एक नया डिब्बा निकाला, उसकी सील फाड़ी ओर उस पर लिख दिया ''प्रियंका''। इस डिब्बे में 6 महीने की पूरी दवाईयां मौजूद थी। उसने लगकर 6 महीने इलाज किया (टी बी न. 795/06) और वो ठीक हो गई।

कुछ महीनों बाद वो फिर बीमार पड़ गई और उसे दोबारा टी बी न. 827/07 के तहत दूसरा डिब्बा खाना पड़ा।

डा0 सहाब ने बताया कि खाने पीने की कमी से जो लोग कुपोषित होते हैं या जिन्हे शूगर (मधुमह, डायविटीज) या एच आई वी एड्स या नशे की लत हो उन्हें टी बी होती भी जल्दी है तथा पूरे इलाज के बाद शायद दोबारा रिलैप्स भी होने का खतरा ज्यादा होता है।

कुछ महीनों बाद प्रियंका के पापा तुफानी भी टी बी के शिकार हुए (टी बी न0 1058/07)।

डा0 सहाब ने बताया अगर मरीज की बलगम में टी बी के कीटाणु निकल रहे हो और वो सावधानी न बरते तो परिवार के दूसरे सदस्यों को सक्रमण हो जाता है। जीवन में पहली बार टी बी की सावधानियों का महत्व मेरी समझ में आया। उस दिन से मैंने हर नये टी बी के मरीज को सावधानियां बार–बार सुनाना व समझाना शुरू कर दिया।

बहुत दुख की बात है कि प्रियंका को तीसरा डिब्बा टी बी न. 380/08 और फिर थोड़ा रूक कर चौथा डिब्बा टी बी न. 150/09 भी खाना पड़ा।

सुना है भगवान जब देता है, छप्पर फाडकर देता है। उस परिवार के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। उसके पापा को दूसरी बार टी बी न. 979/09 और फिर तीसरी बार टी बी न. 47/11 के तहत इलाज लेना पड़ा।

इतना ही नहीं प्रियंका के दोनो बड़े भाई राजेश टी बी न. 816/09 और ब्रिजेश टी बी नं. 1034/09 भी इस रोग से न बच पाऐ।

कुछ दिनों बाद एक आखिरी विकेट भी गिरा। छोटी बहन पूजा भी रोग ग्रस्त हो गई टी बी न. 1052/11।

सबने अपना इलाज पूरा कर लिया है सारा परिवार मेरा तथा भारत सरकार का बहुत आभार व्यक्त करता है कि बार–बार उनको निशुल्क दवा मिलती रही।

टी. बी. क्या है

टी.बी. यानि टयूबरकुलोसिस या क्षय रोग या तपेदिक की बीमारी एक फैलने वाला रोग है। भारत में हर 3 मिनट में 2 व्यक्ति इससे जान गँवातें है। इसका कारण है एक छोटा सा कीटाणु जो हवा के जरिये एक से दूसरे व्यक्ति में फैलता है।

टी.बी. के लक्षण :– लम्बी खांसी, लम्बा बुखार व वजन का घटना टी.बी. के लक्षण होते हैं । आम तौर पर ये लक्षण इतने मामूली और साधारण होते हैं कि किसी को शक नहीं होता है कि टी.बी. जैसी बीमारी शुरु हो चुकी है। जब भी खांसी, बुखार इत्यादि लंबे समय तक चलता रहे तो टी.बी. का शक करना चाहिए।

टी.बी. होने का खतरा किसे ज्यादा होता है ? :– 1.खाने पीने की कमी से जो लोग कमजोर हैं, गरीबी व कुपोषण का शिकार हैं उनमें यह बीमारी ज्यादा पनपती है। 2.शूगर (डायबीटीज) (मधुमेह)(शक्कर की बीमारी) के मरीजों को। 3. एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति तथा AIDS (ऐड्स) के रोगी को। 4.नशे की लत वाले को – बीड़ी, सिगरेट, शराब, गुटखा, तम्बाकू, चरस, गाँजा या ड्रग्स के इन्जैक्शन लगवाने वालों को।

फेफड़े की टीबी ही बीमारी के फैलने का जरिया है:– टी.बी. के 80 प्रतिशत मरीज तो फेफड़े की बीमारी से ग्रस्त होते हैं। फेफड़े की टी.बी. ही सबसे ज्यादा पाई जाती है और समाज के लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। फेफड़े की टी.बी. का ऐसा मरीज जिसकी बलगम में किटाणु जा रहें हों (यानि वह स्पूटम पोजेटिव हो) इस बीमारी को दूसरों में फैला सकता है। इसलिये बलगम की सही जांच करना बहुत जरुरी है। सही इलाज से मरीज की बलगम से कीटाणु जल्द ही साफ हो जाते हैं और संक्रमण रूक जाता है। इसलिये तब तक ऐसे मरीज को सावधानी बरतनी चाहिए जैसे:– खाँसी करते समय मुँह पर रुमाल रखो। ज्यादा से ज्यादा समय बाहर खुले में बिताओ–जैसे पार्क में, खेत में, आंगन में, छत पर या किसी पेड़ के नीचे। बाहर खुले में खांसी के कीटाणु हवा में बिखर जाते हैं और धूप उनको नष्ट कर देती है। इसलिये बाहर ताजी हवा में संक्रमण का खतरा नहीं होता।

टी.बी. शरीर में फेफड़े के इलावा और कहाँ होती है? होने को तो टी.बी. सिर से पैर तक किसी भी अंग में हो सकती है । जैसे गर्दन की गाँठों में, पेट में, जोड़ व हड्डी में, चमड़ी पर, दिमाग में या माँसपेशियों में, जिगर में, गुर्दे में, आँतडियों में, फेफड़े या दिल की बाहरी झिल्ली में, आँख में, रीड की हड्डी में, पुरूष व स्त्री के गुप्तांगों में इत्यादि। फेफड़े को छोड़कर जब टी.बी. दूसरे अंगों में होती है तो यह एक से दूसरे को नहीं फैलती।

क्या टीबी का इलाज है? टी.बी. का इलाज है–यकीनन है । लेकिन थोड़ा लम्बा है। 6 से 8 महीने चलता है। मरीज को महीने दो महीने में ही काफी आराम महसूस होता है। कई बार वो समझता है मैं ठीक हो गया और बीच में इलाज छोड़ देता है जोकि एक भारी भूल है। टी.बी. की जड़ गहरी होती है और इलाज पूरा न करने से कुछ महीनों में बीमारी दोबारा उभर आती है।

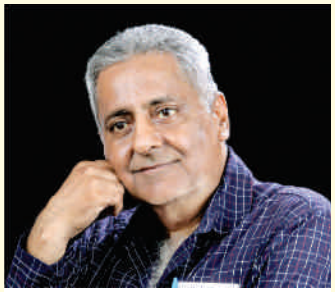

डा0 रमन कक्कड़
सम्पादक (टी.बी. स्पेि लस्ट)
बी.के. अस्पताल, फरीदाबाद
लेखक : एक मौत प्रति मिनट (3 भाशाओं में), द टैस्ट ऑफ टाइम (इंग्लि ा)
निर्माता : "तीन बाते" टी.बी. पर फिल्म, अनेको रेडियो प्रोग्राम

लम्बी खांसी, लम्बा बुखार,
वजन घटता जाए लगातार य
तो टी बी का शक करना मेरे यार !

दिल का दौरा पड़ने पर कुछ ही मिनटों में पूरे मौहल्ले में खबर फैल जाती है कि अमुक व्यक्ति को छाती में भयंकर दर्द उठा है। अधरंग होने पर, लकवा मारने पर मिनटों में ही फोन खड़क जाते हैं और एम्बुलेन्स बुला ली जाती है। पथरी का दर्द होने पर हाय तौबा मच जाती है और मरीज को लेकर अस्पताल भागना पड़ता है। अपेनडिक्स में भी पेट में बहुत जोर का दर्द छिड़ता है, जिससे मरीज बढ़िया अस्पताल में पहुँचने की कोशिश करता है।

टी.बी. में ऐसा कोई ड्रामा नहीं होता। टी.बी के लक्ष्ण काफी हल्के, साधारण और मामूली होते हैं। ये धीरे धीरे, चुपके–चुपके अन्दर ही अन्दर पनपते रहते हैं। मरीज को ज्यादा तंग भी नहीं करते। टीबी के लक्षण कभी हंगामा नहीं मचाते।

टी बी के लक्ष्ण बहुत ही साधारण से होते हैं। अब खाँसी किसको नहीं आती? बुखार किसे नहीं आता? कभी–कभार भूख कम लगने की परेशानी किसे नहीं होती ? जब भी ये छोटे–छोटे लक्षण लम्बे समय तक चलें तो इस बीमारी का शक करना चाहिए। खासकर भारत जैसे देश में जहाँ टी.बी. ज्यादा फैली हुई है। लेकिन जानकारी की कमी के चलते हमारे देश में ऐसा नहीं हो पा रहा है। महीनों तक "खाँसी, बुखार व वजन का गिरना" चलता रहता है, परन्तु घर या पड़ोस में किसी के मन में भी यह ख्याल तक नहीं आता कि कहीं इसको टी.बी. तो नहीं–टीबी का शक ही नहीं पड़ता। इसलिए भारत में "टी.बी. की पहचान में देरी" एक बहुत भारी समस्या है।

टी.बी. का शक करना एक बहुत महत्वपूर्ण पहला कदम होता है क्योंकि अगर शक नहीं होगा तो मरीज सही डॉक्टर के पास नहीं पहुँचेगा, बलगम की जाँच नहीं होगी, एक्सरे नहीं होगा, बीमारी की पहचान नहीं होगी और इलाज नहीं होगा, संक्रमण चलता रहेगा।

टी.बी. की जानकारी न रखना और किसी लम्बी बीमारी होने पर भी इसका शक न करना एक पाप समान है। **हर भारतवासी का यह राष्ट्रीय धर्म है कि वह टी.बी. की थोड़ी बहुत जानकारी बटोरे** ताकि जैसे ही खाँसी, बुखार व कमजोरी के लक्षण शुरु हों तो अपने आप ही उसके मन में खतरे की घण्टी बज उठे, उसको टी.बी. का शक पड़ जाये और वह सही जगह पहुँच कर अपनी जाँच करवा ले।